परिणाम बजट 2013–14

अध्याय –VI

संस्कृति मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन सांविधिक तथा स्वायत्त निकायों के निष्पादन की समीक्षा

संस्कृति मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन 34 स्वायत्त/सांविधिक निकाय हैं। इन 34 संगठनों में से देश के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (जेड सी सी) हैं। ये स्वायत्त/सांविधिक निकाय संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य रहे हैं, नामतः संग्रहालय, सार्वजनिक पुस्तकालय, मानव विज्ञान, मंच कला तथा साहित्यिक कलाएं, बौद्ध एवं तिब्बती अध्ययन, अभिलेखीय पुस्तकालय स्मारक आदि। गत दो वर्षों अर्थात् 2011–12 और 2012–13 (दिसम्बर, 2012 तक) के लिए इन संस्थानों के निष्पादन की समीक्षा करने पर यह देखा गया है कि उनका निष्पादन सामान्य रूप से, उद्देश्यों की दृष्टि से उच्च स्तर का रहा है।

कला और संस्कृति का संवर्धन और प्रचार–प्रसार

क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (जेडसीसी)

क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय संस्कृति के सृजनात्मक विकास में कार्यरत है। संस्कृति मंत्रालय ने देश के विभिन्न भागों में सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र स्थापित किए हैं। ये केन्द्र हैं (i) पूर्वी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (ई जेड सी सी), कोलकाता (ii) उत्तर मध्य क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (एन सी जेड सी सी), इलाहाबाद (iii) पूर्वोत्तर क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (एन ई जेड सी सी), दीमापुर (iv) उत्तर क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (एन जेड सी सी), पटियाला (v) दक्षिण मध्य क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (एस सी जेड सी सी), नागपुर (vi) दक्षिण क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (एस जेड सी सी), तंजावुर तथा (vii) पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र (डब्ल्यू जेड सी सी), उदयपुर। इन क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों का अनिवार्य बल लोगों में सांस्कृतिक जागरूकता पैदा करने और विभिन्न राज्यों के ग्रामीण तथा अर्द्धशहरी क्षेत्रों में लुप्त हो रहे कलारूपों/परम्पराओं का पता लगाने, सम्पोषण करने तथा संवर्धन करने पर रहा है। मंत्रालय द्वारा सात

क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों के कार्यकलापों की निरंतर निगरानी की जाती है और समय-समय पर समीक्षा की जाती है। इन जेड सी सी द्वारा शुरू किए गए कार्यक्रमों को आम जनता और विशेषतः संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों से कलाकार समुदाय में बहुत प्रभावी पाया गया है। कार्यक्रम शुरू करने की आत्मनिर्भरता बढ़ाने के उद्देश्य से मंत्रालय ने प्रत्येक जेड सी सी को उसकी प्रारंभिक अक्षय निधि के रूप में 5 करोड़ रुपए प्रदान किए थे। 10वीं पंचवर्षीय योजना अवधि के दौरान प्रत्येक जेड सी सी के लिए 5 करोड़ रुपए की और अक्षय निधि बढ़ा दी गई है। मंत्रालय राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, गुरू-शिष्य परंपरा, रंगमंच सुदृढ़ीकरण, लुप्त हो रहे कलारूपों के प्रलेखन, शिल्पग्रामों की स्थापना, प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय लोक नृत्य उत्सव (लोक तरंग) तथा गणतंत्र दिवस शिल्प मेला जैसी स्कीमों को कार्यान्वित करने के लिए सीधे निधियाँ भी जारी करता है। जेड सी सी ने संगीत नाटक अकादमी के साथ मिलकर पहली बार मार्च 2006 में''ऑक्टेव'' नामक पूर्वोत्तर उत्सव आयोजित किया। 2011-12 के दौरान, 'आक्टेव' तहत - पूर्वोत्तर उत्सव,25 कार्यक्रम सदस्य राज्यों में आयोजित किए गए थे जिससे जेडसीसी के राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के तहत मेलो,उत्सवों और सांस्कृतिक गतिविधियों में संलग्न बडी संख्या में कलाकार लाभान्वित हुए। इनके अलावा,258 शिष्यों के साथ विभिन्न कला स्वरूपों से लगभग 85 गुरू जेडसीसी से लाभान्वित हुए। 2012-13 के दौरान(दिसम्बर तक),जेडसीसी ने सदस्य राज्यों में पूर्वोत्तर उत्सव 'आक्टेव' आयोजित करने का प्रस्ताव किया है। अब तक आयोजित किए गए 353कार्यक्रमों से जेडसीसी के राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के तहत बडी संख्या में कलाकार लाभान्वित हुए हैं। जेडसीसी की गुरू शिष्य परम्परा की योजना तहत दिसम्बर,2012 तक लगभग 66 गुरू और 110 शिष्य लाभान्वित हुए हैं। समीक्षाधीन वर्ष के दौरान जेडसीसी का कार्यनिष्पादन काफी प्रभावोत्वादक रहा है। मंत्रालय द्वारा समय-समय पर सातों क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों के कार्यकलापों की बारीकी से मानीटरिंग एवं समीक्षा की जाती है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र (सीसीआरटी)

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र (सीसीआरटी) संस्कृति मंत्रालय का एक स्वायत्त संगठन है जिसकी स्थापना 1979 में की गई थी। सीसीआरटी का मुख्य बल देशभर में सेवाकालीन शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों, शैक्षिक प्रशासकों तथा विद्यार्थियों के लिए विविध प्रशिक्षण

कार्यक्रम आयोजित करके सभी विविध कार्यक्रमों में विद्यार्थियों के संस्कृति के महत्व के बारे में जागरूक बनाने पर हैं। सीसीआरटी ने वर्ष 2011–12 के दौरान छात्रवृत्ति धारकों के लिए 5 सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन किया। इसने समीक्षाधीन वर्ष के दौरान सांस्कृतिक प्रतिभा अनुसंधान छात्रवृत्ति योजना के अंर्तगत 500 छात्रवृत्तियाँ प्रदान की। सीडी रोम सहित 4 वीडियो फिल्म सीसीआरटी द्वारा स्कूली विद्यार्थियों में संस्कृति के प्रचार–प्रसार हेतु तैयार की गयीं। विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में 9400 अध्यापकों/अध्यापक शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया और 52008 विद्यार्थियों को भी सामुदायिक तथा विस्तार कार्यक्रमों के तहत प्रशिक्षित किया गया। वर्ष 2012–13 के दौरान (दिसंबर 2012 तक) विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में लगभग 7729 अध्यापकों/अध्यापक शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया तथा देश के विभिन्न भागों में सामुदायिक तथा विस्तार कार्यक्रम के अन्तर्गत 46993 विद्यार्थियों को भी प्रशिक्षित किया गया। 200 नए सांस्कृतिक क्लबों की स्थापना की तुलना में दिसम्बर 2012 तक देश में विभिन्न राज्यों में 92 ऐसे क्लबों स्थापित किए गए। सीसीआरटी ने स्कूली छात्रों एवं बच्चों के लिए भारतीय कला एवं संस्कृति पर 36 व्याख्यानों का आयोजन किया। इसके अतिरिक्त दिसंबर 2012 तक पुनः मुद्रण सहित 17 प्रकाशनों का प्रकाशन किया गया। केंद्र की मंत्रालय द्वारा समय–समय पर समीक्षा की गई है और यह पता चला है कि समीक्षाधीन अवधि के दौरान इसने प्रभावी रूप से कार्य किया है।

<u>कलाक्षेत्र प्रतिष्ठान (केकेएफ)</u>

कलाक्षेत्र प्रतिष्ठान की स्थापना विशेषतः नृत्य और संगीत के क्षेत्रों में भारतीय कला में पारम्परिक मूल्यों के परिरक्षण हेतु एक सांस्कृतिक अकादमी के रूप में रूक्मणी देवी अरून्दले द्वारा 1936 में की गई थी। इस संस्थान के प्रतिबद्ध उद्देश्य सभी कलारूपों तथा उनके क्षेत्रीय रूपों का एकीकरण करना तथा परिणामतः मूल कला के मानक स्थापित करना है। वर्ष 2011–12 के दौरान फाउंडेशन ने रुक्मणी देवी अरंगम और कुलम के थियेटर उन्नयन के तहत विभिन्न मंचकलाओं में श्रेष्ठ आडिओ प्रौद्योगिकी को स्थापित करने का कार्य पूरा कर लिया है। इसने म्यूजियम परियोजना के तहत श्रीमती रुक्मिणी देवी के निजी सामान तथा विश्वस्तरीय पुरावशेषों के कैटलाग को भी तैयार किया। फाउंडेशन ने 3 मुख्य कार्यशालाएं,प्रतिष्ठित स्कॉलरों द्वारा 4 व्याख्यान,150 घंटे के आडियो अभिलेखागार सामग्री का डिज्टिजेशन, 250 घंटे का वीडियो प्रलेखन तथा 5000 फोटोग्राफ भी तैयार किए। इसने 4 उत्सव भी संचालित किए जिसमें

1 नई दिल्ली में भी आयोजित किया गया। यह सम्पूर्ण भारत में क्राफ़्ट बाजार,शोकेसिंग आर्ट स्वरूप के अलावा था। 2012–13 के दौरान (दिसंबर 2012 तक) ध्वनि प्रबंध में सर्वश्रेष्ठ प्रौद्योगिकी स्थापित करने सम्बन्धी कूथमबलम का मरम्मत कार्य प्रगति पर है। इसने वैन्यू में प्रयोक्ता के अनुभव को बढ.ाने हेतु माइक्रोफोन तथा संचार युक्तियों की भी व्यवस्था की है। श्रीमती रुक्मणी देवी संग्रहण में विस्तृत रिकार्ड के सृजन का कार्य भी नामावली प्रक्रिया के भाग के रूप में हाथ में लिया गया है। मंत्रालय नियमित रूप से कलाक्षेत्र के निष्पादन का मानिटरिंग करता रहता है और यह पता चला है कि प्रतिष्ठान सही दिशा में कार्य कर रहा है।

राष्ट्रीय संस्कृति निधि

राष्ट्रीय संस्कृति निधि (एनसीएफ) मानव संसाधन विकास संबंधी संसदीय स्थायी समिति की दसवीं रिपोर्ट में दो गई सफारिशों के आधार पर दिनांक 28 नवंबर 1996 को गजट अधिसूचना एस–ओ. नं. 695 के माध्यम से चेरिटेबल एंडोमेंट एक्ट 1890 के अंर्तगत एक ट्रस्ट के रूप में संस्कृति विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा बनाया गया था। यह भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में सर्वाधिक महत्वपूर्ण नवाचार की व्यवस्था करता है। यह अपनी व्यवस्था से संस्कृति सम्बन्धी प्रयास हेतु सार्वजनिक तथा निजी भागीदारी के सृजन हेतु बौद्धिक तथा वित्तीय दोनों में लोगों के समर्थन को व्यक्त करता ळें संस्कृति जिसे व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखा जाता है,उसमें मूर्त तथा अमूर्त विरासत शामिल हैं। अमूर्त विरासत 31 मार्च 2012 की स्थिति के अनुसार एनसीएफ के पास उपलब्ध कुल धनराशि 41.47 करोड़ रू. है और जिसमें भारत सरकार द्वारा प्राथमिक कायिक निधि के रूप में 19.50 करोड़ रू,गौण कायिक निधि –11.86 करोड. रुपए तथा परियोजना निधि– 10.11 करोड़ रू. शामिल है। वर्तमान में एनसीएपफ के अन्तर्गत 26 चल रही मूर्त,अमूर्त,संग्रहालय तथा अभिलेखागार परियोजनाएं हैं और जो सारे देश में फैली हैं। वर्ष 2011–12 और 2012713 के दौरान एनसीएफ ने इन परियोजनाओं में से 19 को पुनरुज्जिवित किया और 6 नई परियोजनाओं को हाथ में लिया जिसका विवरण नीचे दिया गया है : 2011–12 में एनसीएफ 14 परियोजनाओं को पुनरुज्जीवित किया और 3 नई परियोजनाओं को सीएसआर के जरिए विरासत संरक्षण तथा संवर्धन के क्षेत्र में सार्वजनिक तथा निजी भागीदारी को बढ.ावा देने हेतु प्रारम्भ किया।प्रत्येक भागीदारी को समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करके परिपुष्ट किया गया। एनसीएफ ने विभिन्न संगठनों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और संग्रहालयों के साथ समझौता

ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए।2012–13 में एनसीएपफ ने 4 परियोजनाओं को पुनरुज्जीवित किया और 3 नई परियोजनाओं को सीएसआर के जरिए प्रारम्भ किया तथा 3 नए समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए। सभी परियोजनाएं भलीभांति कार्य कर रही हैं। एनसीएफ की नियमित समीक्षा की जा रही है तथा इसके निष्पादन तथा कार्यप्रणाली को मंत्रालय द्वारा नियमित तौर पर मॉनीटर किया जा रहा है।

अकादेमियाँ तथा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय

संस्कृति मंत्रालय के अधीन तीन राष्ट्रीय अकादेमियाँ नामतः संगीत नाटक अकादेमी, साहित्य अकादेमी ललित कला अकादेमी तथा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एन एस डी) हैं जो पूर्णतः वित्तपोषित स्वायत्त संगठन हैं। मंत्रालय द्वारा देश में मंच, साहित्य और प्लास्टिक कलारूपों का संवर्धन करने के लिए इन अकादमियों की स्थापना की गई थी। ये अकादेमियाँ इन कलारूपों के संवर्धन के लिए अपने संबंधित वर्गीकृत क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान करती आ रही हैं। सरकार द्वारा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एन एस डी) की स्थापना, विभिन्न समूहों को नाट्य कला में प्रशिक्षण देकर देश में मंच कार्यकलापों का संवर्धन करने के लिए की गई थी। एन एस डी देश का एक प्रतिष्ठित संस्थान माना जाता है।

संगीत नाटक अकादेमी (एसएनए)

संगीत नाटक अकादेमी की स्थापना, देश में मंच कलाओं के संवर्धन के लिए वर्ष 1953 में की गई थी। अकादेमी, भारतीय संगीत, नृत्य और नाटक के संवर्धन और विकास; मंच कला और संबंधित क्षेत्र में प्रशिक्षण के मानदंड को बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करती है। एस एन ए का नई दिल्ली में अपना कथक केंद्र तथा मणिपुरी नृत्य के संवर्धन के लिए इंफाल में जवाहर लाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादमी है। इन केंद्रों के अतिरिक्त, एस एन ए के पास भारत में विशिष्ट कलारूपों के संवर्धन के लिए केरल में कुट्टीयट्टम केंद्र और बारीपाडा, जमशेदपुर में छऊकेंद्र हैं। अकादमी भारत की मंच कलाओं को प्रोत्साहित करने में प्रयासरत है तथा इसे प्रख्यात अनुभवी और युवा पीढ़ी के प्रतिभावान कलाकारों को प्रशिक्षण कार्यक्रम, छात्रवृत्ति प्रदान करने एवं प्रलेखन के माध्यम से प्रदर्शनों के द्वारा प्राप्त करता है। वर्ष 2011–12 के दौरान संगीत नाटक अकादमी ने 404 घंटों और 30 मिनट की वीडिओ रिकार्डिग जोड़ी

तथा 63 घंटे और 35 मिनट की आडियो रिकार्डिग 12234 ब्लेक एंड व्हाइट और कलर फोटोग्राफ एसएनए के अभिलेखागार में जोडे. गए,2 पुस्तकें प्रकाशित हुई और 3 डोजियर पेरिस को प्रतिनिधिक सूची का पता लगाने हेतु प्रस्तुत किए गए और मेघदूत में 30 जनवरी 2012 को भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रक्षोपाय सम्बन्धी 1 कार्यशाला आयोजित की गयी। एसएनए ने गुरु शिष्य परम्परा के अन्तर्गत दुर्लभ संगीत उपकरणों के विभिन्न प्रशक्षिण कार्यक्रम/ कार्यशालाएं आयोजित कीं और पूर्वोत्तर के तुंगबक तथा बेना को दिखाय और साथ ही गुवाहाटी में दर्शकों हेतु 15 दिवसीय 250 कटपुतलियों तथा संगीत उपकरणों की प्रदर्शनी भी लगायी। मंच कला सम्बन्धी 225 पुस्तकों को भी पुस्तकालय में जोड.ा गया। कठपुतली खेल हेतु अन्य राष्ट्रीय परियोजना केन्द्र के तहत नई दिल्ली और अन्य ने पूर्वोत्तर में राज्यों में कई उत्सव आयोजित किए और विश्व कठपुतली दिवस पर भारतीय कठपुतली,कार्यशालाएं तथा कठपुतली बनाने वालों से पारस्परिक विचार विमर्श की भी व्यवस्था हेतु प्रदर्शनी लगायी।युवा संगीतकारों/ नर्तकों के कई प्रशिक्षण कार्यक्रम और उत्सव भी आयोजित किए गए। 536 सांस्कृतिक संगठनों को भी वित्तीय सहायता प्रदान की गयी। 2012–13 के दौरान (दिसंबर 12 तक) संगीत नाटक अकादमी ने 135 घंटों की विडीओ तथा 7.40 घंटों की आडियो रिकार्डिंग ,2650 श्याम–श्वेत तथा रंगीन फोटोग्राफ का संवर्धन किया। लक्षदीप के विभिन्न ख्यातिप्राप्त संगीतकारों/ नर्तकों के विशेष प्रलेखीकरण को इसके सर्वेक्षण,प्रलेखीकरण तथा प्रसारण परियोजना के अन्तर्गत लिया गया। एसएनए ने 1 पत्रिका तथा 2 पुस्तकों का प्रकाशन किया।

साहित्य अकादेमी

साहित्य अकादेमी की वर्ष 1954 में संस्कृति मंत्रालय के स्वायत्तशासी संगठन के रूप में स्थापना की गई थी। साहित्य अकादमी एक राष्ट्रीय संगठन है जो सभी भारतीय भाषाओं में साहित्यिक गतिविधियों को पोषित एवं समन्वित करना है तथा उनके माध्यम से देश की सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देकर भारतीय भाषाओं का विकास करने तथा उच्च साहित्यिक मानक तय करने के लिए सक्रिय रूप से कार्य करता है। यह देश में साहित्यिक संवाद, प्रकाशन और इसके संवर्धन के लिए प्रमुख संस्थान है। यह देश का एकमात्र संस्थान है जो अंग्रेजी सहित 24 भारतीय भाषाओं में साहित्यिक कार्यकलाप चलाता है। अपनी स्थापना के 56 वर्ष से अधिक की अवधि में इसने अच्छे विचारों एवं अच्छी पठन आदतों की बढ़ावा देने, सेमिनारों, संगोष्ठियों, व्याख्यानों, चर्चाओं, पठन एवं प्रस्तुतियों के माध्यम से भारत

की विभिन्न भाषाओं एंव साहित्यिक क्षेत्रों के बीच बातचीत को जिंदा रखने के लिए जिसमें कार्यशालाओं एवं व्यक्तिगत कार्यों के माध्यम से आपसी स्थानांतरणों की गति को बढ़ाने की लिए लोक कलाओं का प्रयोग शामिल है और पत्रिकाओं, मोनोग्राफ, प्रत्येक क्षेत्र में व्यक्तित्व और सृजनात्मक कार्य एंथोलोजी, विश्वकोष, शब्दकोश, पुस्तक सूचियों, लेखक निर्देशिकाओं और साहित्य के इतिहास के प्रकाशन के माध्यम से एक महत्वपूर्ण साहित्यिक संस्कृति का विकास करने के लिए प्रयास किया है। साहित्य अकादेमी ने अपने अस्तित्व से दिसंबर 2012 तक 24 भारतीय भाषाओं में 5600 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की हैं। इस वर्ष इसने (रिप्रिंट साहित) लगभग 461 पुस्तकें प्रकाशित की हैं। साहित्य अकादेमी, अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं की पुस्तकों का बहुभाषीय पुस्तकालय है जिसका संग्रह मुख्य रूप से साहित्य और संबद्ध विषयों से संबंधित है। इसमें दिसंबर 2012 तक लगभग 1,63,717 पुस्तकों का संग्रह मौजूद है। अकादमी का पुस्तकालय सुव्यस्थित है जो दिल्ली तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के लोगों के पठन पर ध्यान दे रहा है। यह समकालीन भारतीय साहिव्य में अध्ययन तथा अनुसंधान का महत्वपूर्ण स्रोत है और इसके 9294 से अधिक पंजीकृत सदस्य हैं और क्षेत्रीय कार्यालय पुस्तकालय बंगलौर में लगभग 781 वॉल्यूम जोड़े गए हैं जिसमें कुल 27121 पुस्तकें हैं, क्षेत्रीय कार्यालयो पुस्तकालय, कोलकाता में 2558 वॉल्यूम हैं जिसमें कुल 25163 पुस्तकों का संकलन हैं तथा क्षेत्रीय कार्यालयी पुस्तकालय मुंबई में कुल 6550 पुस्तकों के साथ 90 पुस्तकें और जोड़ी गई हैं। मंत्रालय इसकी गतिविधियों और निष्पादन की बराबर मॉनीटरिंग कर रहा है।

ललित कला अकादेमी (एलकेए)

भारत में दृश्य कलाओं के विकास और संवर्धन के लिए वर्ष 1954 में स्थापित ललित कला अकादेमी, एक राष्ट्रीय कला अकादेमी है। अकादमी के मुख्य कार्य देश में विशेष रूप से समकालीन कला के क्षेत्र में कला के विकास के लिए कलाकार वर्ग को बुनियादी सुविधाएं प्रदान करना है। कला के विकास के प्रति अकादेमी की वचनद्धता नई दिल्ली में इसके मुख्यालय तथा भुवनेश्वर, चेन्नई, कोलकाता, लखनऊ, शिमला और गढ़ी, नई दिल्ली में स्थित इसके क्षेत्रीय केंद्रों द्वारा आयोजित राष्ट्रीय और अंर्तराष्ट्रीय प्रदर्शनियों के माध्यम से स्पष्ट है। पूरे भारतीय महाद्वीप में काम करने वाले एक सांस्कृतिक निकाय के रूप में यह भारत की विविध संस्कृतियों को

आपस में जोडने, भारतीय जीवन की अलग विशेष विशिष्टताओं को जोड़ने वाले सृजनात्मक प्रतिभाओं एवं प्रकाशमान अभिकल्पनों के रंगीन भागों के माध्यम से फैली संस्कृति के जोड़ने में एक प्रमुख भूमिका निभाती है। अकादेमी ने 'आरिस्ट ऑन आर्ट' नामक एक नई श्रृंखला शुरू की है, यह कार्यक्रम अकादेमी का नियमित आयोजन हो गया है। इसे आधुनिक एंव वर्तमान भारतीय कला की प्रगति में प्रमुख योगदान देने वाले कलाकारों के अनुभवों एवं यादों को जोड़कर कला के मौखिक इतिहास का दस्तावेज़ बनाने के लिए बनाया गया है। इस कार्यक्रम के लिए अकादेमी एक प्रख्यात कलाकार तथा एक कला आलोचक अथवा कला के इतिहासकार अथवा क्यूरेटर को कलाकार के साथ बातचीत करने के लिए बुलाया जाता है। कलाकार अपने कार्यो का स्लॉईड शो प्रस्तुत करता है और एक विशिष्ट कार्य को बनाने की प्रक्रिया की गहन जानकारी और ब्यौरा देता है। आलोचक, कलाकार को यात्रा को सघन समझ प्रदान करता है। जिससे कलाकार और उसके कार्यों को समझने में मदद मिलती है। इस परियोजना के पीछे एक अभिलेखीय मंशा भी है ताकिअकादेमी के पास ऐसी सामग्री आ जाए जिसे अकादेमी संरक्षित कर सके और उसका प्रयोग अनुसंधान के लिए हो सके। 2011–12 के दौरान अकादेमी ने 8 प्रदर्शनियां आयोजित कीं जिसमें 1 राष्ट्रीय ,3 क्यूरेटेड प्रदर्शनियां,3 गत तथा 1 आगत प्रदर्शनी शामिल है।इनके अलावा,सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रम के तहत 3 प्रदर्शनियां भी आयोजित की गयी थीं। एलकेए गैलरी में 150 प्रदर्शनियां वर्ष के दौरान आयोजित की गयीं। गुरूदेव रविन्द्र नाथ टैगोर की 150वीं जयंती के अवसर पर गुरदेव रविन्द्र नाथ टैगोर की थीम पर ' ए ग्लोबल पाइनियर' नामक सेमिनार आयोजित किया गया था। एलकेए द्वारा 6 प्रकाशन भी लाए गए। गढी स्टेडिओ,नई दिल्ली की मरम्मत का कार्य भी वर्ष 2011–12 के दौरान हाथ में लिया गया। 2012–13 के दौरान(दिसम्बर 2012 तक) प्रतिनिधिमंडल आदान–प्रदान कार्यक्रम के तहत 1 राष्ट्रीय प्रदर्शनी आयोजित की गयी और चीन से 2 उच्च अधिकार प्राप्त प्रतिनिधिमंडल ने भारत की यात्रा की। एलकेए द्वारा वेनिस (इटली) में 54वीं अन्तरराष्ट्रीय कला प्रदर्शनी ला बाइन्नले लगाई गयी। ओटावा कनाडा में भारतीय समकालीन कला प्रदर्शनी भी लगायी गयी थी जिसमें अकादमी से विजिटिंग प्रतिनिधिमंडल शामिल था। दो आगामी प्रदर्शनियां अर्थात् चेक से 'सटल ब्यूटी ऑफ चेक ' तथा श्रीलंका के पारम्परिक मन्दिर नियोजन सम्बन्धी प्रदर्शनी एलकेए द्वारा समीक्षाधीन वर्ष के दौरान लगायी गयी। इसके अलावा,एलकेए गैलरी में 319 प्रदर्शनियों भी आयोजित की गयीं। गुरूदेव रविन्द्र नाथ टैगोर की 150वीं जयंती के अवसर पर क्यूरिटेड प्रदर्शनी भी

लगायी गयी। मंत्रालय अकादमी के कार्य निष्पादन की नियमित समीक्षा करते रहे हैं और यह पाया गया कि अकादमी इस क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य कर रही है।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एनएसडी)

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय विश्व का एक अग्रणी रंगमंच प्रशिक्षण संस्थान है तथा भारत में अपनी तरह का एकमात्र संस्थान है। इसकी स्थापना वर्ष 1959 में संगीत नाटक अकादेमी द्वारा अपनी एक सहायक ईकाई के रूप में की गयी थी और बाद में 1975 में यह एक स्वतंत्र ईकाई बन गई। यह संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पूर्णताः वित पोषित एक स्वायत्त संस्थान है। इस विद्यालय का उद्देश्य अभिनय और निर्देशन और स्टेज क्राफ्ट के क्षेत्र में छात्रों को प्रशिक्षण देना है और यह तीन वर्षीय स्नात्तकोत्तर डिप्लोमा देता है जोकि स्नात्तकोत्तर हिन्दी के समकक्ष है और भारतीय विश्वविद्यालय संघ द्वारा मान्यताप्राप्त है। 2011-12 के दौरान,एनएसडी ने अपना 14वां भारत रंग महोत्सव प्रस्तुत किया जो रविन्दनाथ टैगौर पर आधारित था तथा उनकी 17 भूमिकाओं का निष्पादन किया गया! इसके अलावा,98 नाटकों का मंचन किया गया जिसमें से 16 विदेशों से भारत रंग महोत्सव के अन्तर्गत निष्पन्न किए गए। लगभग 50000 दर्शकों ने उत्सव/महोत्सव देखा। इसने साथ में और गतिविधियां भी आयोजित की,जैसे 3 से 10 जनवरी,2012 तक अन्तरराष्ट्रीय थियेटर उत्सव संस्थान,केन्द्रीय नाटक अकादमी,चीन पर प्रदर्शनियां, जर्जी ग्रोटोव्स्की, थियेटर के क्षेत्र में समकालीन जिनियस, पोलैंड से पोस्टरों की प्रदर्शनी जो टेगोर के उनके द्वारा निर्देशित नाटकों के दुर्लभ अभिलेखीय फोटोग्राफों का प्रदर्शन करते हैं। प्रदर्शनियों के अलावा,विभिन्न स्थानों पर मंचकला और फिल्म की स्क्रिनिंग भी आयोजित की गयी ।अमतृसर में भी इसके समानान्तर भारत रंग महोत्सव आयोजित किया गया। दो ऑडिटोरियम अर्थात् पंजाब नाटशाला और वीरसा ऑडिटोरियम में कुल 19 नाटकों का मंचन किया गया।2012-13 के दौरान (दिसम्बर 12 तक) रिपरटरी कम्पनी ने अपने लोकप्रिय नाटकों के मंचन क साथ समर थियेटर कार्यशलाओं का आयोजन किया। दो और नए नाटकों का भी प्रीमियर किया गया। द टाई कम्पनी (संस्कार रंग टोली) ने दिल्ली के आठ विभिन्न केन्द्रों में बच्चों के साथ समर थियेटर कार्यशाला और सन्डे क्लब उत्सव का आयोजन किया। कम्पनी ने दिल्ली के सरकारी तथा पब्लिक स्कूलों

बच्चों हेतु अदल बदल और किताबों में हलचल के 19 शो भी आयोजित किए। द टाई कम्पनी ने अगरतला का दौरा किया और 3 नाटकों का मंचन किया। इसके अलावा, दिल्ली के विभिन्न स्कूलों में 'अक्रास द सी ' के 6 शो भी आयोजित किए गए।देश के विभिन्न भागों में स्थानीय एजेंसियों/ समूहों के सहयोग से कई निर्माण उन्मुख बाल थियेटर कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। एनएसडी (टाइ विंग) त्रिपुरा की स्थापना त्रिपुरा सरकार के आईसीएटी विभाग और उच्च शिक्षा विभाग के सहयोग से की गयी जो टाई कार्यप्रणाली में एक वर्षीय प्रमाणपत्र पाठ्कम का आयोजन करता है। रविन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं जन्म शताब्दी के आयोजन हेतु एनएसडी रविन्द्रनाथ टैगोर के कार्यों पर आधारित नाट्कां के मंचन के साथ थियेटर का आयोजन करेगा। तद्नुसार एनएसडी ने तीन प्रतिष्ठित थियेटर समूहों का चयन किया जिसने दिल्ली में अपने कार्यों का प्रस्तुत किया और जिसने एनएसडी सहित विभिन्न स्थानों पर मंचन किया। मंत्रालय इसकी गतिविधियों तथा कार्यनिष्पादन की नियमित तौर पर मॉनीटरिं करता रहा हैं।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (आईजीएनसीए)

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र 1987 में स्थापित एक स्वायत्त न्यास है। यह अध्ययन और सभी कलाओं, जिनकी अपनी अलग-अलग पहचान होते हुए एक-दूसरे के साथ परस्पर निर्भर हैं, के अध्ययन और अनुभव को समाहित करने वाला एक केन्द्र है। आईजीएनसीए का संसाधन सामग्री के संग्रह, कला तथा मानविकी के क्षेत्र में मूल अनुसंधान के कार्यक्रम, विज्ञान की शाखाओं, भौतिकी एवं भौतिक सैद्धान्तिकी, मानव विज्ञान तथा समाज विज्ञान के साथ परस्पर संबंध के माध्यम से सुदृढ़ करने का प्रयास है। केन्द्र के शैक्षिक कार्यक्रमों के संचालन तथा प्रशासनिक व्यय की पूर्ति इसकी अक्षय निधि से अर्जित ब्याज से की जाती है। केन्द्र को इसकी चुनिंदा परियोजनाओं/स्कीमों तथा साथ ही इसकी भवन परियोजनाओं के लिए निधियाँ भी प्रदान की गई है। 2011-12 के दौरान विभिन्न पाठों से चयनित 2755 संदर्भ कार्डों को बहु कला कार्यक्रमों के मध्य बहु शिक्षण सम्बन्धी अनुसंधान और महत्वपूर्ण डॉयलांग के प्रोत्साहन के अन्तर्गत तैयार किया गया। संस्कृत विभाग,बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के सहयोग से ' मैनुस्क्प्टोलॉजी और पेलअिोग्राफी ' पर दो सप्ताह की कार्यशाला आयोजित की गयी। 58 खण्डों में 27पाठों का प्रकाशन किया गया। इनके अतिरिक्त,स्व.डा. सी.आर.स्वामीनाथन

द्वारा अनुदित 5खण्डों का सम्पादन किया गया और प्रेस के लिए तैयार की गयी। गुरूदेव रविन्दनाथ की 150वीं जनशताब्दी के अवसर पर 5 व्याख्यान जिनमें 3 रविन्द्रनाथ टैगौर से सम्बन्धित थे,आयोजित किए गए। मानवजाति विज्ञान सम्बन्धी संग्रहणों के अन्तर्गत पश्चिम बंगाल, आन्ध्र प्रदेश और अन्य राज्यों से विभिन्न स्क्रॉल पेटिंग्स का संग्रहण किया गया। प्रो. ए.के.दास द्वारा तैयार आईजीएनसीए के मानवजाति विज्ञान संग्रहणोंसे पूर्वोत्तर के टेक्स्टाइल सम्बन्धी प्रदर्शनी लगायी गयी। पूर्वोत्तर भारत के इस्मामिक विरासत सहित विभिन्न अनुसंधान परियोजनाएं असम में ब्रह्मपुत्र और बराक घाटी और मणिपुर के विशेष सन्दर्भ के साथ पूरी की गयी। 2012–13 (दिसम्बर 12 तक)के दौरान आगामी कलातत्वकोश खण्डों से सम्बन्धित विभिन्न जुबानों पर 1488 कार्ड तैयार किए गए और आगामी खण्डों से सम्बन्धित कलातत्वकोश पर कार्यशाला भी आयोजित की गयी। आन्तरिक सांस्कृतिक अध्ययन केन्द्र,बीएचयू वाराणसी के सहयोग से लोकआख्यान पर 3 दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार भी आयोजित किया गया। महिला मनीषियों के गीतों पर गीत सम्बन्धित परियोजना का प्रलेखीकरण भी किया गया। केन्द्र में भक्तगण और पारम्परिक गायक आमंत्रित किए गए और उनको रिकाड किया गया। आईजीएनसीए ने प्रकाशन परियोजना का कार्य भी हाथ में लिया है जिसके तहज 6 प्रकाशन पहले ही प्रेस में हैं। 8 विशेष व्याख्यान की योजना बनी और 8 ख्यातिप्राप्त स्कॉलरों से उनकी सहमति के लिए सम्पर्क साधा गया। अनुसंधान परियोजनाओं के तहत प्रकाशन के लिए 4 प्रकाशनों पर कार्रवाई की जा रही है। आईजीआरएमएस और आदिवासी लोक कला एवं बीनोली विकास अकादमी,भोपाल ने सौरा (उड. ीसा),वर्ली (महाराष्ट्र), तथा राथवा (गुजरात) आदि जैसी जनजातीय समुदायों के कलाकारों की पहचान के लिए सहायता दी। आईजीएनसीए स्थित ऑडिटोरियम में एक दिवसीय ‘ गुरू गुहा म्यूजिक उत्सव ’ का आयोजन किया गया। केन्द्र द्वारा पूर्वोत्तर शीर्ष के तहत 7 अनुसंधान परियोजनाएं का निष्पादन किया जा रहा है। जाम्पदा सम्पदा प्रभाग से सम्बन्धित पूर्वोत्तर गतिविधियों की 2800 फोटुओं का प्रलेखीकरण किया जा रहा है। इसने एएसआई के 300 माइक्रोफिल्म और 2700 दुर्लभ फोटुओं का अंकीकरण किया और 700 टैक्स्चूअल डिज्टिजेशन भी किया। मंत्रालय केन्द्र के कार्य निष्पादन तथा कार्यप्रणाली की निरन्तर मॉनीटरिंग करता रहता है।

संग्रहालय

संग्रहालय, राष्ट्र की बहुमूल्य धरोहर के वृहत् भंडार हैं। संग्रहालय लोगों की पसंद विकसित करने तथा उन्हें देश के इतिहास और विरासत के बारे में जानकारी देने और भारत में उपलब्ध सृजनात्मक प्रतिभाओं को प्रस्तुत करने में सकारात्मक तथा महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मंत्रालय इन संग्रहालयों को कला, शिक्षा, अनुसंधान तथा परिबोधन के संवर्धन में कार्यरत केन्द्रों में परिवर्तित करने का प्रयास कर रहा है। मंत्रालय इसके अधीन संग्रहालयों के निष्पादन की नियमित समीक्षा करता है तथा आवश्यक मार्गदर्शन और वित्तीय सहायता प्रदान करता है। आजकल कलाकृतियों तथा अन्य प्रदर्शनीय वस्तुओं के प्रदर्शन तथा प्रलेखन में सूचना प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल पर काफी बल दिया जा रहा है। आर्थिक रूप से विकसित देशों में प्रचलित संग्रहालयों के स्तर को ध्यान में रखते हुए संस्कृत मंत्रालय संग्रहालयों की वीथियों को अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप आधुनिक बनाने पर ध्यान दिया जा रहा है। आर्थिक रूप से विकसित देशों में मौजूद संग्रहालयों के अन्तरराष्ट्रीय मानकों को ध्यान में रखते हुए संस्कृति मंत्रालय का 12वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान महानगरों में मुख्य संग्रहालयों के उन्नयन तथा आधुनिकीकरण का कार्य प्रारम्भ करने का प्रस्ताव है। इस संदर्भ में इन संग्रहालयों द्वारा शुरू किए जाने वाले फोटो प्रलेखन तथा डिजिटीकरण का कार्य महत्वपूर्ण हो जाता है। संग्रहालय अपने सांस्कृतिक तथा शैक्षिक कार्यकलापों के माध्यम से आम जनता तथा बच्चों तक पहुंचने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। वर्ष 2012–13 के दौरान, शिकागो कला संस्थान और ब्रिटिश संग्रहालय जैसे अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के माध्यम से संग्रहालय का क्षमता निर्माण और उसके नेतृत्व का विकास करने के लिए लगातार प्रयास किए गए थे। दर्शकों के अनुभव और स्वयं सेवकों के प्रशिक्षण पर भी ध्यान केंद्रित किया गया था 2011–12 और 2012–13 (दिसम्बर 2012 तक) के दौरान संग्रहालयों के निष्पादन की समीक्षा की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

भारतीय संग्रहालय, कोलकाता

भारतीय संग्रहालय, कोलकाता, जिसकी स्थापना भारतीय संग्रहालय अधिनियम, 1910 के अनुरूप की गई थी, भारत में अपनी किस्म का सबसे बड़ा और सबसे पुराना संस्थान है। यह संग्रहालय सदियों पुराने सांस्कृतिक लोकाचारों तथा परंपराओं को प्रस्तुत करने वाली भारतीय तथा विदेशी कलाकृतियों का अद्वितीय खजाना है। संग्रहालय में कुछेक दुर्लभ मूर्तियों, कांस्य एवं धातु वस्तुओं, सिक्कों, वस्त्रों तथा सजावटी कला नमूनों सहित चित्रों का विशाल भंडार है। समीक्षाधीन अवधि के दौरान कलावीथियों, पुरातत्व एवं मानव विज्ञान

अनुभागों के आधुनिकीकरण और विकास कार्य को सुदृढ़ किया गया है। संग्रहालय द्वारा व्यापक स्तर पर फोटो प्रलेखन का कार्यक्रम शुरू किया गया है। वर्ष 2011–12 के दौरान, भारतीय संग्रहालय ने भौतिक रूप से कला; पुरातत्व तथा मानव विज्ञान संबंधी वस्तुओं की जांच की। संग्रहालय 748 वस्तुओं का रासायनिक उपचार किया जिसमें 310 सिक्के तथा रत्न शामिल थे और साथ ही 2190 प्राचीन वस्तुओं के फोटो प्रलेखीकरण सहित प्राचीन मूल्यवान प्रलेखित निगेटिव का रख–रखाव किया। इसने 814 प्लास्टर की बनी प्रतिकृतियों तथा 779 प्लास्टर की बनी रंगीन प्रतिकृतियों का निर्माण किया; रंग प्रसंस्करण के अन्तर्गत 56 प्रतिकृति बनायी, 1009 पूर्ण रंग की प्रतिकृति बनायी और 12 शैक्षणिक संस्थानों को लोन 40 किटों की आपूर्ति की। भारतीय संग्रहालय की 198 वीं वर्षगांठ के अवसर पर इसने 'एनसिएंट इंडियन टेरेकोटाज ' पर विशेष प्रदर्शनी लगायी। संग्रहालय ने कविगुरू रविन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं जन्म शताब्दी के अवसर पर फोटुओं सहित पेटिंग्स में 'जोरासन्को ठाकुरबाई ओ रविन्द्रनाथ ' नामक प्रदर्शनी आयोजित की । अन्तरराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस के अवसर पर ' राता सर सोरिन्द्र मोहन टैगोर द्वारा दान में दिए गए संगीत यंत्रों ' नामक अन्य प्रदर्शनी भारतीय संग्रहालय में लगायी गयी। भारतीय संग्रहालय द्वारा स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए संचालित म्यूजियम इंटर्नशिप कोर्स म्यूजिओलॉजी विभाग,कलकत्ता विश्वविद्यालय ने पूरा कर लिया है। माननीया संस्कृति मंत्री,भारत सरकार कुमारी सैलजा भारतीय संग्रहालय में आयीं। आशुतोष जन्म शताब्दी हाल,भारतीय संग्रहालय में ' गणेशः वसन्त चौधुरी द़वारा उपहार में दी गयी ' नामक प्रदर्शनी आयोजित की गयी। विभिन्न अवसरों पर दो सेमिनार और छह विशेष व्याख्यान दिए गए। 2012–13 के दौरान(दिसंबर 2012 तक) संग्रहालय ने कला,पुरातत्व सर्वेक्षण तथा मानवविज्ञान वस्तुओं का भी भौतिक रूप से सत्यापन किया। संग्रहालय ने 644 वस्तुओं को रासायनिक उपचार दिया जिसमें वे वस्तुएं भी शामिल थी जिन्हें प्री–हिस्ट्री गैलरी/रिजर्व /लॉग गैलरी/ फ्रन्ट गैलरी आदि में संरक्षित किया गया था और 3304 वस्तुओं का फोटो प्रलेखीकरण किया गया। संग्रहालय ने प्लास्टर की बनी कुल 895 वस्तुओं,कुल प्लास्टर फिनिस की 959 वस्तुओं,कुल पूर्ण कलर फिनिस की 481 वस्तुओं और कलर प्रोसेसिंग के अन्तर्गत कुल 139 वस्तुओं की प्रतिकृतियों को भी तैयार किया। प्लास्टर की प्रतिमूर्ति बनाने के लिए 6 'सिलकिन रबर मोल्ड ' और रबर मोल्डिंग पिघलाने,जी/एपफ कास्टिंग और फिनिसिंग तथा कलरिंग हेतु ताराशंकर बन्दोपाध्याय के 'ज्ञानपीठ ' पुरस्कार की 10 फाइबर ग्लास की प्रतिमूर्ति तैयार की गयी। 'वल्लभी और नालन्दा – बौद्ध शिक्षण के दो

अर्वाचीन मध्यकालिक केन्द्रों ' पर डा. अन्नट्टे शिमिडचेन,एशियाई तथा अफ्रीकी अध्ययन,हमबोल्ड्ट विश्वविद्यालय, बर्लिन, जर्मनी द्वारा 4 अप्रेल, 2012 को विशेष व्याख्यान दिए गए।

निम्नलिखित विषयों पर भी व्याख्यान दिए गए (i) 24 अप्रैल, 2012 को ट्रांस मेघना क्षेत्र (ii) नवंबर, 2012 में 'स्टोन हैंग लैंडस्केप बिफोर स्टोन हैंग'। 22 मई, 2012 को 'सांस्कृतिक विरासत और संग्रहालय अध्ययन' पर एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। 23 से 25 मई 2012 तक उत्तर अमरीकी ओरिएण्टल एवं क्लासीकल अध्ययन संस्थान, संयुक्त राज्य अमेरिका के सहयोग से 'एक बेहतर विश्व का निर्माण करने में प्रारंभिक भारतीय सांस्कृतिक विरासत का महत्व' पर एक अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इंस्टीट्यूट डी चन्दरनगर के सहयोग से 20 से 22 दिसंबर, 2012 तक ''जल दृश्यः झील, नदी, समुद्र और मानव' नामक जल पर एक तीन दिवसीय अंतर सेमिनार का आयोजन किया गया अप्रैल से दिसंबर, 2012 तक अनेक प्रदर्शनियों का भी आयोजन किया गया (i) चित्रकला वीथिका में अबर्नीद्रनाथ नाथ टैगोर की चित्रकलाएं; (ii) कालीघाट पट चित्रकला''; (iii) दरबार हॉल राजभवन, दार्जीलिंग में 'दक्षिण एशिया की बौद्ध कला और शिल्पः प्रदर्शों की व्याख्याएं पर प्रदर्शनी और कार्यशाला (iv) जादूभट्टर तानपुरा संबंधी प्रदर्शनी (v) भारतीय बौद्ध कला पर प्रदर्शनी। संग्रहालय 2014 में अपनी 200वीं जयंती समारोह मनाने का प्रयत्न कर रहा है, जिसके लिए मंत्रालय द्वारा विचारणीय सहायता प्रदान की जा रही है।

सालारजंग संग्रहालय, हैदराबाद

सालारजंग संग्रहालय, हैदराबाद 16 दिसम्बर, 1951 को अस्तित्व में आया। यह संग्रहालय 1961 में संसद के एक अधिनियम द्वारा घोषित राष्ट्रीय महत्व का संस्थान है। यह विविध यूरोपीय, एशियाई तथा विश्व के सुदूर पूर्वी देशों की कलात्मक उपलब्धियों का भंडार है। इस संग्रह का प्रमुख भाग सालारजंग–III के नाम से प्रसिद्ध नवाब मीर युसुफ अली खान द्वारा अधिगृहीत किया गया था। संग्रहालय के मुख्य कार्य संग्रह, परिरक्षण, प्रदर्शनी का आयोजन, शैक्षिक अनुसंधान और प्रकाशन कार्यकलाप का संचालन करना है। संग्रह को सुरक्षित रखने के लिए कुछ भंडारों की आधुनिक और वैज्ञानिक रूपरेखा पर पुनर्गठन किया गया है। वर्ष 2011–12 और 2012–13 के दौरान संग्रहालय द्वारा पाण्डुलिपियों/दस्तावेज/पुस्तकों के संरक्षण और पुस्तकालय के उन्नयन का कार्य जारी रखा गया। नियमित घटनाओं के रूप में, संग्रहालय द्वारा वर्ष 2011–12 के दौरान 28 अस्थाई प्रदर्शनियां, 2 सेमिनार, 3 कार्यशालाएं और 11 व्याख्यान आयोजित किए गए तथा 2 और नयी वीथिकाओं का पुनर्गठन पूरा किया गया। सभी वीथिकाओं में सीसीटीवी और अग्नि चेतावनी प्रणाली संस्थापित की गयी। इसके अतिरिक्त खुली जगहों और बरामदे में भी सीसीटीवी प्रणाली स्थापित की गयी। पश्चिमी ब्लॉक में दूसरे तल पर निर्माण कार्य पूरी तरह संपन्न हो चुका है तथा पूर्वी ब्लॉक के सिविल कार्य चल रहे हैं ताकि अपेक्षाकृत अधिक वीथिकाओं को समायोजित किया जा सके। मंत्रालय नियमित रूप से सालारजंग संग्रहालय के निष्पादन की समीक्षा करता रहा है और यह देखा गया है कि यह सही दिशा में कार्य कर रहा है।

विक्टोरिया मेमोरियल हॉल (वी एम एच), कोलकाता

विक्टोरिया मेमोरियल हॉल, जो राष्ट्रीय महत्व का संस्थान है, की स्थापना भारत–ब्रिटेन इतिहास पर विशेष बल के साथ 1903 के विक्टोरिया मेमोरियल अधिनियम के तहत की गई थी। इस मेमोरियल में जलरंगों, सिक्कों, मानचित्रों, अस्त्र–शस्त्रों, पांडुलिपियों आदि का विशाल भंडार है। जबकि प्रारंभिक संग्रह तथा प्रदर्शन के प्रबंधों को ब्रिटिश साम्राज्य की सामासिक प्रस्तुति के रूप में देखा जाता है, दूसरी

ओर स्वतंत्रता के बाद के संग्रह को भारतीय पहचान यानि राष्ट्रीय पहचान की खोज के रूप में देखा जा सकता है। वर्ष 2011–12 के दौरान विक्टोरिया मेमोरियल हॉल द्वारा किये गये प्रमुख कार्यकलाप हैं–1314 कला वस्तुओं, संगमरमर की 4 बड़ी मूर्ति और धातु की 27 वस्तुओं का संरक्षण। पुस्तकालय/अभिलेखागार की पुरानी एवं दुर्लभ पुस्तकों की 18 मदों आदि का संरक्षण किया गया। वीएमएच द्वारा 1150 कला वस्तुओं का अंकीकरण किया गया, रानी विक्टोरिया का पियानो भी दर्शकों के लिए सेंट्रल हॉल में प्रदर्शित किया गया। दरवाजों, खिडकियों तथा फर्नीचर की विशेष मरम्मत और इन पर पॉलिश करने के लिए इनका जीर्णोद्धार चल रहा है तथा अहाते की दीवार की रंगाई का कार्य पूरा किया गया है। इसने 3 थर्मो हाइग्रोमीटर भी खरीदे हैं। हॉप्स शांतिनिकेतन तथा 'समथिंग न्यू' पुस्तक विमोचन ओल्ड, समथिंग न्यू, की चित्रकारी प्रदर्शनी को माउंट किया गया है। वी एण्ड ए संग्रहालय, यूके के सहयोग से कालीघाट चित्रकला की अन्य प्रदर्शनी आयोजित की गयी। इनके अतिरिक्त, वी एम एच ने 'आइडिया ऑफ स्पेस एण्ड रविन्द्रनाथ टैगोर' की फोटो प्रदर्शनी, चार्ल्स डोयली की कलाकृति '21 वीं शताब्दी में एक महान राष्ट्र के रूप में भारत का विकास' प्रर्दशनी का आयोजन किया। इनके अतिरिक्त, वीएमएच ने 8 वां जयिया सनहाटी उत्सव ओ भारत मेला, सुंदरवन सृष्टि मेला, ओ लोकी संस्कृति उत्सव, 24 वां बिस्नुपुर मेला, 35 वां सुंदरवन मेला, विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी में भाग लिया। वर्ष 2012 के दौरान (12 दिसंबर तक) वीएमएच ने वीथिकाओं और भंडारों के आधुनिकीकरण/उन्नयन के लिए परियोजना कार्य भी प्रारंभ किये हैं। आरबीएस सदस्य पुस्तक सूची कार्य के साथ–साथ आरबीएस वस्तुओं के भंडार का सत्यापन कार्य भी चल रहा है। वीएमएच द्वारा समीक्षाधीन अवधि के दौरान, तैल चित्र सहित 868 कलावस्तुओं का संरक्षण किया गया। 3 तैल चित्रों को उपचारात्मक मरम्मत प्रक्रिया प्रदान की गयी। पुस्तकालय/अभिलेखागार की 3 पुरानी दुर्लभ पुस्तकों का भी संरक्षण किया गया। श्री शक्ति बर्मन द्वारा अनुदर्शी प्रदर्शनी 'द वंडर ऑफ इट ऑल' का भी आयोजन किया गया तथा इसने राष्ट्रीय एकता और गांधी मेले में भी भाग लिया। एक अन्य यात्रा प्रदर्शनी और वीएमएच के संग्रह में संताल पट पर एक पुस्तक सूची का प्रकाशन भी किया गया। इन कार्यकलाप के अतिरिक्त, वीएमएच ने रिर्पाटाधीन अवधि के दौरान अपने शैक्षिक कार्यक्रमों के तहत विभिन्न राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार/कार्यशालाएं, सिट एण्ड ड्रा प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, कला शिविर, व्याख्यान आदि का आयोजन किया। मंत्रालय वी.एम.एच. के निष्पादन का नियमित रूप से मानिटरिंग करता रहा है।

इलाहाबाद संग्रहालय, इलाहाबाद

इलहाबाद संग्रहालय को भारत सरकार, संस्कृति विभाग द्वारा सितम्बर 1985 में इसे राष्ट्रीय महत्व का संस्थान घोषित किया गया। वर्ष 2011–12 की अवधि के दौरान संग्रहालय ने 4 प्रकाशन निकाले। रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान, मॉडलिंग अनुभाग ने प्लास्टर ऑफ पेरिस में मूर्तियों के 12 रबर ढांचों, प्लास्टर ढांचों, पीस मोल्ड तैयार किये, मूर्तियों के 258 ढांचों को पूरा करने का कार्य किया, 258 ढांचों की धूल–मिट्टी से सफाई और उनकी रंगाई का कार्य किया तथा प्लास्टर ऑफ पेरिस की 321 मूर्तियों के ढांचे तैयार किये और प्रतिकृतियों को आपूर्ति आदेश को पूरा करने के लिए जनता को प्रदान करने के लिए विक्रय काउंटर पर रखे गये। वीथिकाओं के शीर्षकों और शोकेसों तथा गैलरी शीटों तथा प्राकृतिक इतिहास वीथिका का जीर्णोद्धार किया गया। संग्रहालय ने सुप्रसिद्ध कवि सूर्य कांत त्रिपाठी 'निराला' की वस्तुओं–कुर्ता, टोपी, कलम और प्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा द्वारा हस्ताक्षरित कवि के प्रथम दिवस आवरण टिकट का अधिग्रहण किया। कला क्रय समिति के माध्यम से 08.09 लाख रुपये की कला वस्तुओं का अधिप्रापण किया गया इसने उन्नीस (19) व्याख्यानों, परिसंवादों/स्मारक व्याख्यान, कार्यशालाएं, 2 राष्ट्रीय सेमिनार, प्रदर्शनी, अंतर्राष्ट्रीय संग्रहालय दिवस, टैगोर की वर्षगांठ, वृत्तचित्रों और फिल्मों का प्रदर्शन, विश्व पर्यटन दिवस, विरासत भ्रमण, स्थापना दिवस, कला समीक्षा पाठ्यक्रम आदि का भी आयोजन किया। इस अवधि के दौरान, विभिन्न विषयों पर आधारित 7 प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया। वर्ष 2012–13 के दौरान (12 दिसंबर तक) संग्रहालय ने विभिन्न विषयों पर 358 पुस्तकों का अधिप्रापण किया और उन्हें उपलब्ध कराया। 100 पुस्तकों को वर्गीकृत किया गया तथा उन्हें सूचीपत्र में दर्ज किया गया। 2264 पाठकों ने पुस्तकालय में उपस्थिति दर्ज की तथा विद्वानों द्वारा 257 पुस्तकों का पठन किया गया। पाठक की आवश्यकता के अनुसार, 7327 जीरोक्स प्रतियां ली गयीं। पुस्तकालय के लिए 20 पत्रिकाओं का अंशदान किया गया। इस अवधि के दौरान दीमक की प्रमुखता वाले क्षेत्र में धूमन, दीमक रोधी उपचार और कीटनाशकरोधी उपचार के नेमी कार्यों के अतिरिक्त, कुल 1743 वस्तुओं का संरक्षण किया गया जिनमें पत्थर की 10 मूर्तियां, 10 चित्र, 29 पाण्डुलिपियां (1500

फोलियो वाली), 2 वस्त्र, 100 अभिलेखीय सामग्री, 9 पुस्तकें, धातु की 32 वस्तुएं, 1550 सिक्के और 1 प्राकृतिक इतिहास नमूना शामिल है। रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान, अनुभाग ने 11 रबर ढांचों, प्लास्टर ढांचों, प्लास्टर मॉडलों में मूर्तियों के 212 ढांचों का मरम्मत किया, मूर्तियों के 29 फायबरों को पूरा किया, 29 ढांचों को धूल–मिट्टी से साफ किया तथा उनकी रंगाई की। विक्रय काउंटर को प्रतिकृतियां सौंपी गयीं। धूमन के नेमी कार्यों के अतिरिक्त, इस अवधि के दौरान दीमक की प्रमुखता वाले क्षेत्र में दीमक रोधी उपचार और कीड़े–मकोडे रोधी उपचार किये गये तथा कुल 1091 वस्तुओं का संरक्षण किया गया जिनमें पत्थर की 208 मूर्तियां, 19 चित्र, 5 वस्त्र, 15 अभिलेखीय साम्रगी, 71 पुस्तकें, धातु की 59 वस्तुएं, 687 सिक्के, 12 चित्र, सोने के 7 सिक्के, चांदी के 3 सिक्के, हाथी दांत की 4 वस्तुएं शामिल हैं। संरक्षण यूनिट ने संरक्षण पर एक कार्यशाला का भी आयोजन किया। मंत्रालय संग्रहालय के कार्य निष्पादन और कार्यकरण का लगातार मानीटरन करता रहा है।

राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान : कला इतिहास, संरक्षण एवं संग्रहालय विज्ञान (एन एम आई), नई दिल्ली

इस संस्थान की स्थापना/पंजीकरण 27.01.1989 को सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के तहत की गई तथा इसे 28 अप्रैल, 1989 को भारत सरकार द्वारा विश्वविद्यालयवत का दर्जा दिया गया। संस्थान का मुख्य उद्देश्य कला इतिहास, संरक्षण तथा संग्रहालय विज्ञान आदि की विभिन्न शाखाओं में अध्ययन, प्रशिक्षण तथा अनुसंधान के विभिन्न पाठ्यक्रम चलाना है। संस्थान कला इतिहास, संरक्षण तथा संग्रहालय विज्ञान के क्षेत्रों में एम. ए. तथा पी. एच. डी. के पाठ्यक्रम चलाता है तथा उपाधियां देता है। यह मूल रूप से एक शैक्षिक संस्थान है जो संग्रहालयों और संबंधित विषयों में पाठ्यक्रम प्रदान करता है। वर्ष 2011–12 में 26 विद्यार्थी कला इतिहास, संरक्षण एवं संग्रहालय विज्ञान में एम. ए. में उत्तीर्णता प्राप्त की जबकि वर्ष के दौरान केवल 8 विद्यार्थियों ने पीएचडी डिग्री प्राप्त की, इसके अतिरिक्त, 30 विद्यार्थी भी भारतीय कला और संस्कृति, संरक्षण, और संग्रहालय विज्ञान के अल्पकालीन पाठ्यक्रम में उत्तीर्ण हुए। 3 राष्ट्रीय सेमिनार/कार्यशालाएं/प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। कला इतिहास, संस्कृति और संग्रहालय विज्ञान से संबंधित विषयों पर 3 विशेष व्याख्यान भी आयोजित किए गए। वर्ष 2012–13 के दौरान (दिसम्बर 2012 तक) तक एमए के 20 विद्यार्थी और पीएचडी के 2 विद्यार्थी उर्तीण हुए। भारतीय कला और संस्कृति, कला समीक्षा तथा भारतीय कला निधि में अल्पकालीन पाठ्यक्रम चल रहे हैं। संस्थान द्वारा 2 अंतर्राष्ट्रीय, 1 राष्ट्रीय सेमिनार और 6 कार्यशालाओं/प्रदर्शनियों/प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। समीक्षाधीन अवधि के दौरान, 6 विशेष व्याखयानों का भी आयोजन किया गया है। संस्थान ने विशेषीकृत क्षेत्र के एक शैक्षिक संस्थान के रूप में अपने कर्त्तव्य का निर्वहन किया है।

राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद, कोलकाता

राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद (एनसीएसएम) संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त संगठन है जो भारत में विज्ञान संग्रहालयों और विज्ञान केन्द्रों का एक शीर्ष निकाय है। एनसीएसएम फिलहाल पूरे भारत में 25 विज्ञान

संग्रहालयों और केन्द्रों का संचालन करता है, जो महानगरों, राज्य की राजधानियों और जिला मुख्यालयों में फैले हुए हैं। ये विज्ञान केन्द्र उत्कंठा की भावना पैदा करने, सृजनात्मक प्रतिभा का पोषण करने तथा समुदाय में वैज्ञानिक अभिवृत्ति का सृजन करने के लिए एक प्रयोग आधारित शिक्षण वातावरण प्रदान करता है। संचार के द्विशाखी माध्यम – प्रदर्श और कार्यकलाप इसकी विशेषता है। जबकि इनडोर और आउटडोर दोनों प्रदर्श अधिकाशतः अंतर क्रियात्मक होते हैं, प्रदर्शन और प्रशिक्षण कार्यक्रम भी पूर्णतः भागीदारी वाले होते हैं तथा बच्चों और वयस्कों दोनों को एक समान खेल–खेल में आनंद प्राप्त करते हुए विज्ञान की बुनियादी बातें सिखाते हैं। एनसीएसएम देश भर में चल विज्ञान प्रदर्शनियों का भी आयोजन करता है जो अधिकांशतः ग्रामीण क्षेत्रों में होते हैं तथा यह भारत और विदेश में भ्रमण यात्रा प्रदशर्नियां आयोजित करता है। वर्ष 2011–12 के दौरान, रांची विज्ञान केन्द्र और धारवाड़ क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र जनता के लिए खोल दिये गये। क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र, रायपुर (छत्तीसगढ़), क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र (आरएससी), कोयम्ब्टूर (तमिलनाडु), आरएससी, पीलिकुला (कर्नाटक), आरएससी, पीसीएमएसी, पूणे (महाराष्ट्र), आरएससी, जयपुर (राजस्थान), उपक्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र (एसआरएससी), जोरहट (असम) में विकास कार्य पूरे होने के अग्रिम अवस्था में है। आरएससी, देहरादून (उत्तराखंड), एसआरएससी, जोधपुर (राजस्थान) और एसआरएस, पुदुचेरी की स्थापना प्रारंभ की गयी। विज्ञान शहर, कोलकाता का उन्नयन कार्य अर्थात 'विज्ञान अन्वेषण हॉल' का निर्माण भी प्रारंभ किया गया। एनबीएससी, सिलिगुड़ी (पश्चिम बंगाल), डीएससी, तिरूनेलवेली (तमिलनाडु), डीएससी, गुलबर्ग (कर्नाटक) और डीएससी, धर्मपुर (गुजरात) में 8 मीटर के चार नये डोम डिजिटल तारामंडल जनता के लिए खोल दिये गये। इस परिषद के अंतर्गत, 9 नई वीथियां और 6 सुविधाएं वर्तमान विज्ञान केन्द्रों में जोड़ी गयीं। एनसीएसएम ने 'भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की मौजूदा स्थिति', 'दिल्ली में खेलकूद के समारोह – अभिलेखागारों से' 'सीमा के पारः सुब्रहमण्यन चंद्रशेखर', 'आचार्य प्रफुल्ल चन्द्र रेः एक अनुश्रुति का जीवन और विज्ञान', 'लेज़र' और 'जल–एक बहुमूल्य संसाधन', नामक 6 अस्थाई प्रदर्शनियों का आयोजन किया। एनसीएसएम द्वारा नेहरू तारामंडल, दिल्ली का, अद्यतन उपस्कर, प्रदर्श के साथ उन्नयन किया गया तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एन सी टी), दिल्ली

सरकार के दिल्ली जल बोर्ड के लिए 'जल– जीवन का अमृत' का निर्माण किया गया। एनसीएसएम की विभिन्न यूनिटों में वर्ष 2011–12 के दौरान विज्ञान प्रदर्शन व्याख्यान, लोकप्रिय व्याख्यान आदि सहित विभिन्न नवोन्मेषी कार्यक्रम भी आयोजित किये गये। वर्ष 2012–13 (दिसम्बर 2012 तक), छत्तीसगढ़ विज्ञान केन्द्र, रायपुर और आरएससी जयपुर का उद्घाटन किया गया। आरएससी, कोयम्बटूर और प्रिंपरी, चिंचवाड विज्ञान केन्द्र, पुणे उद्घाटन के लिए तैयार हैं। एसआरएससी, जोरहट, आरएससी, पिलीकुला पूर्णता की उन्नत स्थिति में हैं। आरएससी, देहरादून, एसआरएससी, जोधुपर, एसआरएससी, पांडीचेरी और विज्ञान शहर , कोलकाता स्थित 'विज्ञान अन्वेषण हॉल' में विकास कार्य चल रहे हैं। एनसीएसएम ने अवधि के दौरान डीएससी, गुलबर्ग में लोकप्रिय विज्ञान वीथिका, प्रागैतिहासिक पशु उद्यान, मिरर मेज कॉर्नर सहित अनेक नयी वीथिकाएं और सुविधाएंः डीएससी, धर्मपुर में 3 डी थियेटरः जीएससी, पणजी में 8 मीटर का डोम डिजिटल तारामंडल; एनएससी मुंबई में 'जलवायु परिवर्तन' वीथिका; आरएससी और तारामंडल, कालीकट में 'साइंसिया' नामक विद्यार्थी विज्ञान क्लब; डीएसएसी, पुरूलिया में 'वर्षा जल संचय' सुविधा; विज्ञान शहर कोलकता में 'मेटा! ब्लास्ट' नामक थ्री डी विडियो गेम; डीएससी, तिरूनेलवेली में 'दर्पण जादू' वीथिका; क्षेत्रीय विज्ञान शहर, लखनऊ में 'जलः हमारा जीवन' वीथिका प्रदान की। एनसीएसएम में, त्रिनिदाद एवं टोबेगो और गुयाना में वर्ष 2012–13 में प्रदर्शनियों के भी आयोजन किए जो बहुत ही सफल रहें।

संस्कृति मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन सांविधिक तथा स्वायत्त निकायों के निष्पादन की समीक्षा

संस्कृति मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन 33 स्वायत्त/सांविधिक निकाय हैं। इन 33 संगठनों में से देश के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (जेड सी सी) हैं। ये स्वायत्त/सांविधिक निकाय संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य रहे हैं, नामतः संग्रहालय, सार्वजनिक पुस्तकालय, मानव विज्ञान, मंच कला तथा साहित्यिक कलाएं, बौद्ध एवं तिब्बती अध्ययन, अभिलेखीय पुस्तकालय स्मारक आदि। गत दो

वर्षों अर्थात् 2010-11 और 2011-12 (दिसम्बर, 2011 तक) के लिए इन संस्थानों के निष्पादन की समीक्षा करने पर संस्कृति मंत्रालय ने यह पाया है कि ये स्वायत्त संगठन अपने संबंधित क्षेत्र में तीव्र निष्पादन के साथ उद्देश्यों और लक्ष्यों, जिनके लिए इन्हें स्थापित किया गया है, की प्राप्ति में सराहनीय कार्य कर रहे हैं।

कला और संस्कृति का संवर्धन और प्रचार-प्रसार

क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (जेड सी सी)

क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय संस्कृति के सृजनात्मक विकास में कार्यरत है। संस्कृति मंत्रालय ने देश के विभिन्न भागों में सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र स्थापित किए हैं। ये केन्द्र हैं (i) पूर्वी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (ई जेड सी सी), कोलकाता (ii) उत्तर मध्य क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (एन सी जेड सी सी), इलाहाबाद (iii) पूर्वोत्तर क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (एन ई जेड सी सी), दीमापुर (iv) उत्तर क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (एन जेड सी सी), पटियाला (v) दक्षिण मध्य क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (एस सी जेड सी सी), नागपुर (vi) दक्षिण क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (एस जेड सी सी), तंजावुर तथा (vii) पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र (डब्ल्यू जेड सी सी), उदयपुर। इन क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों का अनिवार्य बल लोगों में सांस्कृतिक जागरूकता पैदा करने और विभिन्न राज्यों के ग्रामीण तथा अर्द्धशहरी क्षेत्रों में लुप्त हो रहे कलारूपों/परम्पराओं का पता लगाने, सम्पोषण करने तथा संवर्धन करने पर रहा है। मंत्रालय द्वारा सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों के कार्यकलापों की निरंतर निगरानी की जाती है और समय-समय पर समीक्षा की जाती है। इन जेड सी सी द्वारा शुरू किए गए कार्यक्रमों को आम जनता और विशेषतः संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों से कलाकार समुदाय में बहुत प्रभावी पाया गया है। कार्यक्रम शुरू करने की आत्मनिर्भरता बढ़ाने के उद्देश्य से मंत्रालय ने प्रत्येक जेड सी सी को उसकी प्रारंभिक अक्षय निधि के रूप में 5 करोड़ रुपए प्रदान किए थे। 10वीं पंचवर्षीय योजना अवधि के दौरान प्रत्येक जेड सी सी के लिए 5 करोड़ रुपए की और अक्षय निधि बढ़ा दी गई है। मंत्रालय राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, गुरू-शिष्य परंपरा, रंगमंच सुदृढ़ीकरण, लुप्त हो रहे कलारूपों के प्रलेखन, शिल्पग्रामों की स्थापना, प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय लोक नृत्य उत्सव (लोक तरंग) तथा गणतंत्र दिवस शिल्प मेला जैसी स्कीमों को कार्यान्वित करने के लिए सीधे निधियाँ भी जारी करता है। जेड सी सी ने संगीत नाटक अकादमी के साथ मिलकर पहली बार मार्च 2006 में''ऑक्टेव'' नामक पूर्वोत्तर उत्सव आयोजित किया। 'आक्टेव' उत्सव के दौरान पूर्वोत्तर क्षेत्र के सैकड़ों कलाकार दिल्ली आए और दिल्ली में आयोजित आक्टेव उत्सव में भाग लिया। ''आक्टेव'' का अगला उत्सव मार्च, 2007 के दौरान हैदराबाद में आयोजित किया गया तथा अगला

पूर्वोत्तर आक्टेव उत्सव फरवरी, 2008 में तिरूवनंतपुरम में आयोजित किया गया। जेड सी सी द्वारा हैदराबाद में पूर्वोत्तर राज्यों की महिला कलाकारों सहित सैकड़ों कलाकारों तथा कला प्रस्तुतकर्त्ताओं की भागीदारी से नवम्बर तथा दिसम्बर, 2008 में गोवा, मुम्बई तथा पटना में संगीत नाटक अकादमी के सहयोग से उत्सव आयोजित किए गए हैं। इसके अतिरिक्त, वर्ष 2009–10 में, सूरत में पूर्वोत्तर उत्सव ''आक्टेव'' आयोजित किया गया और 2010–11 में पूर्वोत्तर का उत्सव ''ऑक्टेव'' सोलन (हिमाचल प्रदोश) में आयोजित किया गया और यह उत्सव वित्तीय वर्ष 2011–12 के दौरान फरवरी, मार्च 2012 के दौरान आयोजित किया जाएगा। समीक्षाधीन वर्ष के दौरान, जेड सी सी के समग्र निष्पादन को काफी प्रभावी पाया गया है। मंत्रालय द्वारा समय–समय पर सातों क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों के कार्यकलापों की बारीकी से मानीटरिंग एवं समीक्षा की जाती है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र (सीसीआरटी)

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र (सीसीआरटी) संस्कृति मंत्रालय का एक स्वायत्त संगठन है जिसकी स्थापना 1979 में की गई थी। सीसीआरटी का मुख्य बल देशभर में सेवाकालीन शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों, शैक्षिक प्रशासकों तथा विद्यार्थियों के लिए विविध प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करके सभी विविध कार्यक्रमों में विद्यार्थियों के संस्कृति के महत्व के बारे में जागरूक बनाने पर हैं। सीसीआरटी ने वर्ष 2010–11 के दौरान छात्रवृत्ति धारकों के लिए चार सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन किया। इसने समीक्षाधीन वर्षके दौरान 10–14 वर्ष के आयु समूह में उत्कृष्ट बच्चों के मंच तथा अन्य कलाओं का अध्ययन करने के लिए सांस्कृतिक प्रतिभा अनुसंधान छात्रवृत्ति योजना के अंर्तगत 500 छात्रवृत्तियाँ दी। देश के विभिन्न राज्यों में 194 नए सांस्कृतिक क्लबों की स्थापना की गई। विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में लगभग 8000 अध्यापकों/अध्यापक शिक्षकों कों प्रशिक्षित किया गया। वर्ष 2011–12 के दौरान (दिसंबर 2011 तक) विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में लगभग 4600 अध्यापकों/अध्यापक शिक्षकोंको प्रशिक्षित किया गया तथा देश के विभिन्न भागों में अभिमुखी करण प्रशिक्षण कार्यक्रमों/रिफ्रेशर पाठ्यक्रमों इत्यादि के अंर्तगत 22565 छात्रों को भी प्रशिक्षित किया गया। 200 नए सांस्कृतिक क्लबों की स्थापना की तुलना में दिसम्बर 2011 तक देश में विभिन्न चरणों में 124 ऐसे क्लबों स्थापित किए गए। सीसीआरटी ने स्कूली छात्रों एवं बच्चों के लिए भरतीय कला एंव संस्कृति पर 50 व्याख्यानों का आयोजन किया।

इसके अतिरिक्त दिसंबर 2011 तक पुनः मुद्रण सहित 13 प्रकाशनों का प्रकाशन किया गया। केंद्र की मंत्रालय द्वारा समय-2 पर समीक्षा की गई है और यह पता चला है कि समीक्षाधीन अवधि के दौरान इसने प्रभावी रूप से कार्य किया है।

कलाक्षेत्र प्रतिष्ठान (के के एफ)

कलाक्षेत्र प्रतिष्ठान की स्थापना विशेषतः नृत्य और संगीत के क्षेत्रों में भारतीय कला में पारम्परिक मूल्यों के परिरक्षण हेतु एक सांस्कृतिक अकादमी के रूप में रूक्मणी देवी अरून्दले द्वारा 1936 में की गई थी। इस संस्थान के प्रतिबद्ध उद्देश्य सभी कलारूपों तथा उनके क्षेत्रीय रूपों का एकीकरण करना तथा परिणामतः मूल कला के मानक स्थापित करना है। वर्ष 2010-11 के दौरान दिसंबर 2010 के दौरान 58वां वार्षिक कला उत्सव आयोजित किया गया जिसमें कला क्षेत्र रेपर्टरी कंपनी द्वारा रूक्मणी देवी की नृत्य-नाटक प्रस्तुति शामिल है। दिसंबर 2010 में इसने दाताकारी हाट समिति के सहयोग से क्राफ्ट बाजार आयोजन किया। रामायण श्रृंखला के शेष 3 भागों का प्रलेखीकरण कार्य पूरा किया गया। अक्तूबर 2011 में कला क्षेत्र द्वारा 3 दिवसीय स्वानुभव उत्सव आयोजित किया गया जिसमें छात्रों को प्रख्यात संगीतकारों एवं नर्तकों के देखने तथा उनसे बातचीत करने का अवसर मिला। अगस्त 2011 में कलाक्षेत्र फाउंडेशन ने संगीतकारों तथा संगीत के छोत्रों के लिए 'वौइस कल्चर' पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। कलाक्षेत्र में 21 और 31 दिसंबर 2011 को 59वां वार्षिक कला उत्सव आयोजित किया गया। उत्सव में संगीत प्रस्तुतियों में श्रीमती अरूणा साईराम, श्रीमती जयंती कुमारेश, रूद्रपटनम भाईयों, प्रो. टी एन कृष्णन द्वारा कर्नाटक संगीत तथा श्री देबाशीष भट्टाचार्य (हिंदुस्तानी गिटार) श्री उदय अवलकर (हिंदुस्तानी वोकल) पंडित वेंकटेश कुमार (हिंदुस्तानी वोकल) तथा डा. ध्रुव घोष (सारंगी) द्वारा हिंदुस्तानी संगीत शामिल है। कलाक्षेत्र ने 19-23 सितंबर 2011 को एक पांच-दिवसीय कथकक्ली उत्सव 'राजसम' पुस्तुत किया। नवम्बर 2011 में कलाक्षेत्र ने अलाएंस फ्रैकेस के साथ सहयोग के पांच-दिवसीय इंडो-फ्रेंच कंटेम्पोरेरी डांस फेस्टीवल की मेजवानी की। अक्टूबर 2011 में उत्तर पूर्व विकास कार्यक्रम के एक भाग के रूप में कलाक्षेत्र ने पूर्वोत्तर राज्यों की दो राजधानियों में कार्यक्रम प्रस्तुत किए। जुलाई 2011 में इंडा-कोरियन सेन्टर ने कलाक्षेत्र में चौथा सैमसंग महिला अंतर्राष्ट्रीय फिल्म उत्सव का आयोजन किया। दिसंबर, 2011 में कलाक्षेत्र प्रतिष्ठान ने प्रकृति प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित एक चार-दिवसीय कविता पठन उत्सव की मेजबानी की। कुछ समय बाद गुरूदेव रविन्द्रनाथ टैगोर के 150वीं जयंती समारोह के एक भाग के रूप में कलाक्षेत्र ने जापान के पठन का आयोजन किया। मंत्रालय नियमित रूप से कलाक्षेत्र के निष्पादन का मानिटरिंग करता रहता है और यह पता चला है कि प्रतिष्ठान सही दिशा में कार्य कर रहा है।

राष्ट्रीय संस्कृति निधि

राष्ट्रीय संस्कृति निधि (एनसीएफ) मानव संसाधन विकास संबंधी संसदीय स्थायी समिति की दसवीं रिपोर्ट में दो गई सफारिशों के आधार पर दिनांक 28 नवंबर 1996 को गजट अधिसूचना एस–ओ. नं. 695 के माध्यम से चेरिटेबल एंडोमेंट एक्ट 1890 के अंर्तगत एक ट्रस्ट के रूप में संस्कृति विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा बनाया गया था। इसका उद्देश्य भारत की मूर्त एवं अर्मूत सांस्कृतिकविरासत का उन्नयन संरक्षण एवं अनुरक्षण के लिए संसाधन जुटाना था। राष्ट्रीय संस्कृति निधि इस कार्य में राज्य सरकारों, कॉरपोरेट सेक्टर, गैर सरकारी संगठनों, निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्रों की भागीदारी को प्रात्साहित करता है। संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार इस निधि की कायिक निधि के लिए 19.50 करोड रू. का प्रावधान करने के लिए वचनबद्ध हैं और एन सी एफ की कायिक निधि के लिए पूरी धनराशी प्रदान करने की अपनी वचनबद्धता को इसने पूरा किया है। 31 मार्च 2011 की स्थिति के अनुसार एनसीएफ के पास उपलब्ध कुल धनराशि 43.13 करोड़ रू. है और जिसमें भारत सरकार द्वारा प्राथमिक कायिक निधि के रूप में प्रदान किए गए 19.50 करोड़ रू. के अतिरिक्त 11.60 करोड़ रू. की परियोजना निधि तथा माध्यमिक कायिक निधि में 12.30 करोड़ रू. शामिल है। इसके अतिरिक्त इण्डियन ऑयल कॉरपोरेशन से इसकी परियोजना निधि के रूप में 27.00 करोड़ रू. की राशि प्राप्त हुई है, तथा इस धनराशी में से 1.00 करोड़ रू. एनसीएफ और इंडियन ऑयल फाउंडेशन के संयुक्त बैंक खाते में एनसीएफ के पास रखे गऐ है तथा शेष धनराशि इंडियन ऑयल फाउंडेशन के पास रखी गई है। समीक्षाधीन वर्ष के दौरान एनसीएफ परियोजनाओं के निजी क्षेत्र के वित्तपोषकों द्वारा चार परियोजनाओं का परियोजना कार्यान्वयन को समिति की कई बैठकें एंव उचित प्रबंधन के साथ पुनः सक्रिय एंव पुनः विकासित किया गया है। राष्ट्रीय संस्कृति निधि ने सार्वजानिक एवं निजी क्षेत्र के साथ भागीदारी में इन इस वर्ष 13 से अधिक नए समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए और नौ नई परियोजनाएं शुरू कीं। पिछले दो वर्षो के दौरान मंत्रालय द्वारा एनसीएफ की समीक्षा से यह अनुमान लगाया जाता है कि इसे सौंपा गया कार्य यह सफलापूर्वक तरीके से कर रहा है।

अकादेमियाँ तथा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय

संस्कृति मंत्रालय के अधीन तीन राष्ट्रीय अकादेमियाँ नामतः संगीत नाटक अकादेमी, साहित्य अकादेमी ललित कला अकादेमी तथा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एन एस डी) हैं जो पूर्णतः वित्तपोषित स्वायत्त संगठन हैं। मंत्रालय द्वारा देश में मंच, साहित्य और प्लास्टिक कलारूपों का संवर्धन करने के लिए इन अकादमियों की स्थापना की गई थी। ये अकादेमियाँ इन कलारूपों के संवर्धन के लिए अपने संबंधित वर्गीकृत क्षेत्र में उत्कृष्ट

सेवाएं प्रदान करती आ रही हैं। सरकार द्वारा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एन एस डी) की स्थापना, विभिन्न समूहों को नाट्य कला में प्रशिक्षण देकर देश में मंच कार्यकलापों का संवर्धन करने के लिए की गई थी। एन एस डी देश का एक प्रतिष्ठित संस्थान माना जाता है।

संगीत नाटक अकादेमी (एस एन ए)

संगीत नाटक अकादेमी की स्थापना, देश में मंच कलाओं के संवर्धन के लिए वर्ष 1953 में की गई थी। अकादेमी, भारतीय संगीत, नृत्य और नाटक के संवर्धन और विकास; मंच कला और संबंधित क्षेत्र में प्रशिक्षण के मानदंड को बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करती है। एस एन ए का नई दिल्ली में अपना कथक केंद्र तथा मणिपुरी नृत्य के संवर्धन के लिए इंफाल में जवाहर लाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादमी है। इन केंद्रों के अतिरिक्त, एस एन ए के पास भारत में विशिष्ट कलारूपों के संवर्धन के लिए केरल में कुट्टीयट्टम केंद्र और बारीपाडा, जमशेदपुर में छऊकेंद्र हैं। अकादमी भारत की मंच कलाओं को प्रोत्साहित करने में प्रयासरत है तथा इसे प्रख्यात अनुभवी और युवा पीढ़ी के प्रतिभावान कलाकारों को प्रशिक्षण कार्यक्रम, छात्रवृत्ति प्रदान करने एवं प्रलेखन के माध्यम से प्रदर्शनों के द्वारा प्राप्त करता है। वर्ष 2010–11 के दौरान संगीत नाटक अकादमी ने अपने भंडार में 52 घण्टे की श्रव्य तथा 444 घंटो की दृश्य रिकार्डिंग, 11031 ब्लैक एंड तथा वाइट तथा रंगीत फोटोग्राफ शामिल किया। अकादेमी ने 9 नामांकन डोजियर भेजे जिसमें एस एन ए द्वारा कव्वाली, डब्ल्यू जेड सी सी द्वारा पगड़ी बाधने, ए पी सरकार, द्वारा कलमकारी चित्र, एन जेड सी सी जनगम गायन, केरल सरकार द्वारा चेट्रीकुलांगरा कुम्भ भारती केट्टुकाजाचा, गोआ सरकार द्वारा सम्मेलन, आई जी एन सी ए द्वारा गड्डी जाटर, राष्ट्रीय ग्रंथालय, कोलकाता द्वारा दुर्गापूजा, एन एस डी द्वारा नौटंकी से लेकर 31.3.2011 को पेरिस के यूनेस्कों तक शामिल है। एस एस ए ने संगना सहित तीन पत्रिकाओं का प्रकाशन किया तथा अपनी रेपर्टरी द्वारा 3 नया प्रोडक्शन लगाए। इसने अपनी एक योजना के अंतर्गत रामलीला, बैदिक उद्घोष तथा कुटियातम की सहायता के साथ 33 संस्थानों/पेशेवरों को सहायता अनुदान देने की भी सिफारिश की। इसके अतिरिक्त 470 सांस्कृतिक संस्थानों की भी वित्तीय सहायता के लिए सिफारिश की तथा पूवोत्तर क्षेत्र निधियों से सहायता अनुदान के लिए 152 आवेदनों की सिफारिश की। वर्ष2011–12 के दौरान (दिसंबर 11 तक) संगीत नाटक अकादमी ने 60 घंटों की ऑडियो तथा 324 घंटो की विडियो रिकार्डिंग का संवर्धन अपने सर्वेक्षण, प्रलेखीकरण तथा प्रचार परियोजना के अंतर्गत 7940 श्याम–श्वेत तथा रंगीन फोटोग्राफ का संवर्धन किया। इसने उत्सवों की एक श्रृंखला–पुतुल यात्रा उत्सव का भी आयोजन किया तथा गुवाहाटी और शिलोंग में भारतीय कठपुतली की प्रदर्शनी का भी आयोजन किया। समीक्षाधीन अवधि के दौरान एस एन ए द्वारा विशाखपटनम में नृत्य प्रतिमा कार्यक्रम तथा नैनीताल

में संगीत प्रतिभा का भी आयोजन किया। इसने देश के विभिन्न भागों में नई उत्सव कार्यशालाओं तथा प्रदर्शनियों का भी आयोजन किया। टैगोर जी की 150वीं जयंती समारोह के लिए एस एन ए ने रबीन्द्र प्रनति, थियटर उत्सव (देहरादून), रिमेम्बरिंग रबीन्द्रनाथ, नृत्य नाटक नृत्यांजलि का आयोजन किया। डॉ. भूपेन हजारिका को श्रद्धांजलि दी।

साहित्य अकादेमी

साहित्य अकादेमी की वर्ष 1954 में संस्कृति मंत्रालय के स्वायत्तशासी संगठन के रूप में स्थापना की गई थी। साहित्य अकादमी एक राष्ट्रीय संगठन है जो सभी भारतीय भाषाओं में साहित्यिक गतिविधियों को पोषित एवं समन्वित करना है तथा उनके माध्यम से देश की सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देकर भारतीय भाषाओं का विकास करने तथा उच्च साहित्यिक मानक तय करने के लिए सक्रिय रूप से कार्य करता है। यह देश में साहित्यिक संवाद, प्रकाशन और इसके संवर्धन के लिए प्रमुख संस्थान है। यह देश का एकमात्र संस्थान है जो अंग्रेजी सहित 24 भारतीय भाषाओं में साहित्यिक कार्यकलाप चलाता है। इसने अपने अस्तित्व के 56 वर्षों से अब तक अच्छे विचारों एवं अच्छी पठन आदतों की बढ़ावा देने, सेमिनारों, संगोष्ठियों, व्याख्यानों, चर्चाओं, पठन एवं प्रस्तुतियों के माध्यम से भारत की विभिन्न भाषाओं एंव साहित्यिक क्षेत्रों के बीच बातचीत को जिंदा रखने के लिए जिसमें कार्यशालाओं एवं व्यक्तिगत कार्यों के माध्यम से आपसी स्थानांतरणों की गति को बढ़ाने की लिए लोक कलाओं का प्रयोग शामिल है और पत्रिकाओं, मोनोग्राफ, प्रत्येक क्षेत्र में व्यक्तित्व और सृजनात्मक कार्य एंथोलोजी, विश्वकोष, शब्दकोश, पुस्तक सूचियों, लेखक निर्देशिकाओं और साहित्य के इतिहास के प्रकाशन के माध्यम से एक महत्वपूर्ण साहित्यिक संस्कृति का विकास करने के लिए प्रयास किया है। साहित्य अकादेमी ने अपने अस्तित्व से दिसंबर 2011 तक 24 भारतीय भाषाओं में 6400 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की हैं। इस वर्षइसने (रिप्रिंट साहित) लगभग 420 पुस्तकें प्रकाशित की हैं। साहित्य अकादेमी, अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं की पुस्तकों का बहुभाषीय पुस्तकालय है जिसका संग्रह मुख्य रूप से साहित्य और संबद्ध विषयों से संबंधित है। इसमें दिसंबर 2011 तक लगभग 1,62,311 पुस्तकों का संग्रह मौजूद है। अकादेमी का पुस्तकालय दिल्ली और राष्ट्रीय राजभाषा क्षेत्र के लोगों को पाठक सेवाएं दे रहा है तथा इसका व्यापक प्रयोग होता है। यह आधुनिक भारतीय साहित्य में अध्ययन एवं अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण स्रोत है और इसके 9000 से अधिक पंजीकृत सदस्य, है तथा क्षेत्रीय कार्यालय पुस्तकालय बंगलौर में 900 वॉल्यूम जोड़े गऐ हैं जिसमें कुल 26,340 पुस्तकें हैं, क्षेत्रीय कार्यालयो पुस्तकालय, कोलकाता में 3950 संकलन हैं तथा 22605 पुस्तकें और क्षेत्रीय कार्यालयी पुस्तकालय मुंबई में कुल 6460 पुस्तकों के साथ 395 पुस्तकें और जोड़ी गई हैं।

ललित कला अकादेमी (एल के ए)

भारत में दृश्य कलाओं के विकास और संवर्धन के लिए वर्ष 1954 में स्थापित ललित कला अकादेमी, एक राष्ट्रीय कला अकादेमी है। अकादमी के मुख्य कार्य देश में विशेष रूप से समकालीन कला के क्षेत्र में कला के विकास के लिए कलाकार वर्ग को बुनियादी सुविधाएं प्रदान करना है। कला के विकास के प्रति अकादेमी की वचनद्धता नई दिल्ली में इसके मुख्यालय तथा भुवनेश्वर, चेन्नई, कोलकाता, लखनऊ, शिमला और गढ़ी, नई दिल्ली में स्थित इसके क्षेत्रीय केंद्रों द्वारा आयोजित राष्ट्रीय और अंर्तराष्ट्रीय प्रदर्शनियों के माध्यम से स्पष्ट है। पूरे भारतीय महाद्वीप में काम करने वाले एक सांस्कृतिक निकाय के रूप में यह भारत की विविध संस्कृतियों को आपस में जोडने, भारतीय जीवन की अलग विशेष विशिष्टताओं को जोड़ने वाले सृजनात्मक प्रतिभाओं एवं प्रकाशमान अभिकल्पनों के रंगीन भागों के माध्यम से फैली संस्कृति के जोड़ने में एक प्रमुख भूमिका निभाती है। अकादेमी ने 'आरिस्ट ऑन आर्ट' नामक एक नई श्रृंखला शुरू की है, यह कार्यक्रम अकादेमी का नियमित आयोजन हो गया है। इसे आधुनिक एंव वर्तमान भारतीय कला की प्रगति में प्रमुख योगदान देने वाले कलाकारों के अनुभवों एवं यादों को जोड़कर कला के मौखिक इतिहास का दस्तावेज़ बनाने के लिए बनाया गया है। इस कार्यक्रम के लिए अकादेमी एक प्रख्यात कलाकार तथा एक कला आलोचक अथवा कला के इतिहासकार अथवा क्यूरेटर को कलाकार के साथ बातचीत करने के लिए बुलाया जाता है। कलाकार अपने कार्यो का स्लॉईड शो प्रस्तुत करता है और एक विशिष्ट कार्य को बनाने की प्रक्रिया की गहन जानकारी और ब्यौरा देता है। आलोचक, कलाकार को यात्रा को सघन समझ प्रदान करता है। जिससे कलाकार और उसके कार्यो को समझने में मदद मिलती है। इस परियोजना के पीछे एक अभिलेखीय मंशा भी है ताकि अकादेमी के पास ऐसी सामग्री आ जाए जिसे अकादेमी संरक्षित कर सके और उसका प्रयोग अनुसंधान के लिए हो सके। इस श्रृंखला के बैनर तले अकादेमी ने 17-10-2011 को एक प्रख्यात कलाकार श्री गुलाम मोहम्मद शेख को आंमत्रित किया। अकादेमी तथा संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार ने ''गुरूदेव रविद्रं नाथ टैगोर की 150वीं जयंती''; सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत भारत बांग्लादेश का एक संयुक्त समारोह को मनाने के लिए अकादेमी बेंसमेंट गैलरी में 10 से 16 मई 2011 तक आर्टिस्ट-इन-रेंजिडेंस कार्यक्रम के अंर्तगत बांग्लादेश के कलाकारों द्वारा एक चित्रकला कैंप बांग्ला तुली आयोजित कियां प्रख्यात कलाकार और अकादमी के फैलो प्रो. ए. रामचन्द्रन ने इस कैंप का उद्घाटन किया। इस कैंप में भाग लेने के लिए बंग्लादेश से कलाकार हमीदउज्जमान खान, अहमद शमशुदोहा, अब्दुल मन्नान, नसरीन ब्रेगम, मोहम्मद

इक़बाल, शेख अफ़जल हुसैन, मोहम्मद युनेस, गोलम फरूख़ बेबूल को चुना गया। अकादेमी ने अकादमी की गैलरी में गायत्री सिन्हा के संरक्षण में ''टालस्टाय फार्म'' आर्कायिव ऑफ यूरोपिया'' नामक एक प्रदशर्नी का आयोजन किया। 27 अप्रैल 2011 को माननीय संस्कृति, आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्री, कुमारी सैलजा ने इसका उद्घाटन किया। यह प्रदशर्नी 19 मई 2011 तक चली। अकादमी में 28 अप्रैल 2011 को ''मेकिंग आर्ट इश्यू इन डॉकटिस'' शीर्षक पर एक पैनल चर्चा का आयेाजन किया। इसके पैनल पर रणवीर काले का मीठू सैन, रियास कोमू, गिरी सकेरिया, अर्चना हांडे और प्रो. पारुल मुखर्जी दवे शामिल हैं। अकादेमी सीगल बुक स्टोर, कोलकाता पर, सोमनाथ होर पर 13.8.2011 एक पुस्तक का विमोचन किया। इस अवसर पर अकादमी के अध्यक्ष श्री अशोक वाजपेयी मुख्य अतिथि थे। इस बुक का संपादन नानक गांगुली द्वारा किया गया है। इस समारोह के दौरान मोहन कोल, प्रणव रंजन रे, चंदना होर, और नानक गांगुली ने सोमनाथ होर पर अपने विचार रखे। कोस्तुभ ऑडिटोरियम नई दिल्ली में अकादेमी द्वारा 37 फिल्म। विडियो शो का आयोजन किया गया। अकादेमी ने 3-6-2011 से 27-11-2011 तक इटली में हुई'' 54वीं अंतर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी : लॉ विएनले डी वेनेज़िया'' में भाग लिया।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एन एस डी)

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय विश्व का एक अग्रणी रंगमंच प्रशिक्षण संस्थान है तथा भारत में अपनी तरह का एकमात्र संस्थान है। इसकी स्थापना वर्ष 1959 में संगीत नाटक अकादेमी द्वारा अपनी एक सहायक ईकाई के रूप में की गयी थी और बाद में 1975 में यह एक स्वतंत्र ईकाई बन गई। यह संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पूर्णताः वित पोषित एक स्वायत्त संस्थान है। इस विद्यालय का उद्देश्य अभिनय और निर्देशन और स्टेज क्राफ्ट के क्षेत्र में छात्रों को प्रशिक्षण देना है और यह तीन वर्षीय स्नात्तकोत्तर डिप्लोमा देता है जोकि स्नात्तकोत्तर हिन्दी के समकक्ष है और भारतीय विश्वविद्यालय संघ द्वारा मान्यताप्राप्त है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय ने 7 से 22 जनवरी 2011 तक अपने 13वें बी.आर.एम. का आयोजन किया। इसमें कुल 31 नाटकों का मंचन किया गया जिसमें से 23 नाटक विदेशों से थे। विद्यालय ने संबद्ध (आयोजनों का आयोजन किया जैसे एशिया– पेसिफिक ब्यूरों ऑफ ड्रामा स्कूल का उत्सव, परस्पर वार्तालाप सत्रों द्वारा निदेशकों के साथ परस्पर वार्तालाप सत्र के उपरांत व्याख्यान इत्यादि। इस उत्सव कार्यक्रमों के एक भाग के रूप में तीन फोटोग्राफी प्रदर्शनियों का भी आयोजन किया गया जिनमें से एक एशियन थियेटर स्कूल की कार्यप्रणालियों (एशिया पेसिफिक ब्यूरो, ड्रामा स्कूल उत्सव के एक भाग के अंर्तगत) पर, अभिनेताओं पर एक प्रदर्शनी जिसका शीर्षक अभिव्यक्ति है तथा तीसरी ''फूट्स बार्न कंपनी'' पर थे। उत्सव के दायरे को बढ़ाने और दिल्ली के बाहर रंगमचं प्रेमियों के साथ इसके समृद्ध तत्वों को बांटने के उद्देश्य के उत्सव को दूसरे शहर में ले जाने की परम्परा के अंर्तगत मुख्य आयोजन से कई नाटकों को चेन्नई ले जाया गया जहां दिल्ली में उत्सव के साथ–साथ 11से 20 जनवरी 2011 को भारत रंग महोत्सव चेन्नई का आयोजन हुआ। अकादमिक सत्र 2011–12 के लिए पूरे देश से 26 छात्रों को चुना गया जिनमें सरकार की नीति के अनुसार अ.जा./अ. जन जा. तथा अ.पि.व. श्रेणियों के छात्र भी शामिल है। वर्ष 2011–12 में रेपर्टरी कंपनी ने 19 मई से 16 जून, 2011 तक कई प्रमुख नाटकों का मंचन किया जिसमें एम.के.रैना. द्वारा 'बाणभट्ट की आत्मकथा' मोहित टाकलकर द्वारा 'कामरेड कुंभकर्ण ' तथा कीर्ति जैन द्वारा 'हमारा शहर उस बरस शामिल है। रेपर्टरी कंपनी के नवनिर्मित विंग 'यायावर ' ने रंजित कपूर द्वारा चेखव की दुनिया, आदमज़ाद और पंचलाईट का मंचन किया और दिल्ली में 21 से 26 नवंबर 2011 तक अपना टूअर किया और बाद में मध्यप्रदेश के 13 शहरों में 3 से 31 दिसंबर 2011 तक बैंगलूर, हैदराबाद, गोवाहाटी, शिव सागर, सिलिगुड़ी और

कोलकाता में भी टूअर किया जहां 'बेग़म का तकिया', 'ब्लड वेडिंग', 'कॉमरेड कुंभकरण', 'हमारा शहर उस बरस' और 'जात ही पूछो साधु की' का मंचन किया।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (आई जी एन सी ए)

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र 1987 में स्थापित एक स्वायत्त न्यास है। यह अध्ययन और सभी कलाओं, जिनकी अपनी अलग-अलग पहचान होते हुए एक-दूसरे के साथ परस्पर निर्भर हैं, के अध्ययन और अनुभव को समाहित करने वाला एक केन्द्र है। आई जी एन सी ए का संसाधन सामग्री के संग्रह, कला तथा मानविकी के क्षेत्र में मूल अनुसंधान के कार्यक्रम, विज्ञान की शाखाओं, भौतिकी एवं भौतिक सैद्धान्तिकी, मानव विज्ञान तथा समाज विज्ञान के साथ परस्पर संबंध के माध्यम से सुदृढ़ करने का प्रयास है। केन्द्र के शैक्षिक कार्यक्रमों के संचालन तथा प्रशासनिक व्यय की पूर्ति इसकी अक्षय निधि से अर्जित ब्याज से की जाती है। केन्द्र को इसकी चुनिंदा परियोजनाओं/स्कीमों तथा साथ ही इसकी भवन परियोजनाओं के लिए निधियाँ भी प्रदान की गई है। 11वीं पंचवर्षीय योजना के प्रारंभ में आई जी एन सी ए ने बड़ी नई स्कीमें शुरू की जैसे-बहु-स्तरीय पहचान और कला में उनकी अभिव्यक्ति, संसाधन वृद्धि एवं आधुनिकीकरण तथा डिजिटल प्रारूप में सांस्कृतिक सूचनापरक विकास एवं प्रसार। कम्प्यूटर सूचनापरक प्रयोगशाला ने, राष्ट्रीय स्मारक और पुरावशेष मिशन जिसके पास वस्तुओं के डाटा तथा चित्र उपलब्ध हैं तथा जो पुरावशेष के रूप में रजिस्ट्रेशन के लिए उद्धृत हुआ है, के अन्तर्गत 47,000 पुरावशेष पंजीकरण प्रारूपों का डिजिटीकरण किया है।

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान आई जी एन सी ए ने प्रख्यात शिक्षाविदों के मौलिक पाठ, जनजातीय एवं लोक संस्कृति पर मौनोग्राफ, पाठों का पुनः प्रकाशन के महत्वपूर्ण संस्करणों के प्रकाशन से संबंधित कार्य किया। वर्ष 2010-11 के दौरान इस शोध एवं क्षेत्र अध्ययनों के अतिरिक्त श्रब्य-दृश्य प्रलेखीकरण ; प्रदर्शिनियों तथा मल्टी-मीडिया आयोजनों का प्रदर्शन भी किया गया। इसने फिल्मों, सीडी, आडियो विजुअल रिकार्डिंग इत्यादि बनाना भी शुरू किया। संसाधन संवर्धन एवं आधुनिकीकरण योजना के एक भाग के रूप में. कई पुस्तकें पत्रिकाएं, इत्यादि इसके पुस्तकालय में जोड़े गए। वर्ष 2011-12 के दौरान, (दिसम्बर 2011 तक) विविध कलाओं में बहु-विषयक शोध एवं महत्वपूर्ण विचार-विमर्श को बढ़ावा देने संबंधी अधिकांश योजनाओं/परियोजनाओं को पूरा कर लिया गया है तथा शेष चालू स्थिति में हैं। आई जी एन सी ए ने दिसम्बर 2011 तक रेप्रोग्राफी कम्प्यूटर सेन्टर एण्ड मीडिया प्रोडक्शन में अधुनातन पुस्तकालय सेवाओं के आधुनिकीकरण, पूर्वोत्तर से पुरातत्वीय सामग्री का

संग्रहण, प्रदर्शन एवं प्रदर्शनियों के लिए स्थायी गैलरियों का निर्माण कार्य शुरू किया। मंत्रालय केन्द्र के निष्पादन और कार्यकरण का निकटता से मानिटरिंग करता रहा है।

संग्रहालय

संग्रहालय, राष्ट्र की बहुमूल्य धरोहर के वृहत् भंडार हैं। संग्रहालय लोगों की पसंद विकसित करने तथा उन्हें देश के इतिहास और विरासत के बारे में जानकारी देने और भारत में उपलब्ध सृजनात्मक प्रतिभाओं को प्रस्तुत करने में सकारात्मक तथा महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मंत्रालय इन संग्रहालयों को कला, शिक्षा, अनुसंधान तथा परिबोधन के संवर्धन में कार्यरत संगठनों में परिवर्तित करने का प्रयास कर रहा है। मंत्रालय इसके अधीन संग्रहालयों के निष्पादन की नियमित समीक्षा करता है तथा आवश्यक मार्गदर्शन और वित्तीय सहायता प्रदान करता है। आजकल कलाकृतियों तथा अन्य प्रदर्शनीय वस्तुओं के प्रदर्शन तथा प्रलेखन में सूचना प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल पर काफी बल दिया जा रहा है। संग्रहालयों की वीथियों को अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप आधुनिक बनाने पर ध्यान दिया जा रहा है। आर्थिक रूप से विकसित देशों में प्रचलित संग्रहालयों के अंतर्राष्ट्रीय मानकों को ध्यान में रखते हुए संस्कृति मंत्रालय का 11वीं पंचवर्षीय योजना अवधि में महानगरों में प्रमुख संग्रहालयों का उन्नयन और आधुनिकीकरण कार्य शुरू करने का प्रस्ताव है। इस संदर्भ में इन संग्रहालयों द्वारा शुरू किए जाने वाले फोटो प्रलेखन तथा डिजिटीकरण का कार्य महत्वपूर्ण हो जाता है। संग्रहालय अपने सांस्कृतिक तथा शैक्षिक कार्यकलापों के माध्यम से आम जनता तथा बच्चों तक पहुंचने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। 2010–11 और 2011–12 (दिसम्बर 2011 तक) के दौरान संग्रहालयों के निष्पादन की समीक्षा की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

भारतीय संग्रहालय, कोलकाता

भारतीय संग्रहालय, कोलकाता, जिसकी स्थापना भारतीय संग्रहालय अधिनियम, 1910 के अनुरूप की गई थी, भारत में अपनी किस्म का सबसे बड़ा और सबसे पुराना संस्थान है। यह संग्रहालय सदियों पुराने सांस्कृतिक लोकाचारों तथा परंपराओं को प्रस्तुत करने वाली भारतीय तथा विदेशी कलाकृतियों का अद्वितीय खजाना है। संग्रहालय में कुछेक दुर्लभ मूर्तियों, कांस्य एवं धातु वस्तुओं, सिक्कों, वस्त्रों तथा सजावटी कला नमूनों सहित चित्रों का विशाल भंडार है। समीक्षाधीन अवधि के दौरान कलावीथियों, पुरातत्व एवं मानव विज्ञान अनुभागों के आधुनिकीकरण और विकास

कार्य को सुदृढ़ किया गया है। संग्रहालय द्वारा व्यापक स्तर पर फोटो प्रलेखन का कार्यक्रम शुरू किया गया है। वर्ष 2010–11 के दौरान, भारतीय संग्रहालय ने भौतिक रूप से कला; पुरातत्व तथा मानव विज्ञान संबंधी वस्तुओं की जांच की। संग्रहालय 961 वस्तुओं का रासायनिक उपचार किया तथा प्राचीन वस्तुओं के प्राचीन मूल्यवान प्रलेखित निगेटिव का रख–रखाव किया जिसमें 7021 रंगीन तथा ब्लैक एण्ड वाइट फोटो का डिजिटलीकरण; 2413 फोटोग्राफ का मुद्रण; 1945 प्राचीन वस्तुओं का फोटो प्रलेखीकरण; 7965 प्राचीन वस्तुओं का डिजीटल फोटो प्रलेखीकरण और 2413 रंगीन फोटो शामिल है। इसने 475 प्लास्टर की बनी प्रतिकृतियों तथा 9 रंगीन प्रतिकृतियों का निर्माण किया; 40 उपयोगी किटों की आपूर्ति की। भारतीय संग्रहालय की 197 वीं वर्षगांठ के अवसर पर इसने 2 फरवरी से लेकर 11 फरवरी 2011 तक ''लावण्य –द ब्यूटी इन इंडिया आर्ट'' पर एक विशेष प्रदर्शनी आयोजित की इस अवसर पर 4 फरवरी, 6 फरवरी, 8 फरवरी और 9 फरवरी 2011 को प्रख्यात कलाकारों द्वारा भारतीय संग्रहालय द्वारा सेन्ट्रल कोर्टयार्ड में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयेजन किया गया। वर्ष 2011–12 के दौरान (दिसंबर 2011 तक)संग्रहालय ने कवि गुरू रबीन्द्र नाथ टैगोर की 150 वीं जयंती के अवसर पर फोटोग्राफ सहित चित्रकला पर ''जोरासंको ठाकुर बरी ओ रबीन्द्र नाथ'' नामक एक प्रदर्शनी का आयोजन किया। म्यूज़ियोंलॉली विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर छात्रों के लिए भारतीय संग्रहालय द्वारा संचालित संग्रहालय इंटर्नशिप कोर्स पूरा कर लिया गया है। माननीय संस्कृति मंत्री, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार कुमारी सैलजा ने 6–11–2011 को भारतीय संग्रहालय का दौरा किया। 1–से–4 दिसंबर 2011 को भारतीय संग्रहालय के आशुतोष बर्थ सेंटिनरी हॉल में भारतीय संग्रहालय के संग्रह में ''गणेशाः गिफ्टिड बॉई वंसत चौधरी'' नामक एक प्रदर्शनी का अयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी का अयोजन श्री जवाहर सरकार, आई ए एस; सचिव, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा किया गया। डॉ. श्यामल कांती चक्रवर्ती, भूतपूर्व निदेशक, भारतीय संग्रहालय और श्रीमती शिप्रा चक्रवर्ती भूतपूर्व कीपर, कला अनुभाग, भारतीय संग्रहालय द्वारा लिखित '' गण देवता हन्ड्रड ऑईकन्स फ्रॉम वसंत चौधरी कलॅक्शन'' कैट्लॉग का 1 दिसंबर, 2011 संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव श्री जवाहर सरकार आई.ए.एस. द्वारा विमोचन किया गया। इसकी शुरूआत ही मंत्रालय संग्रहालय के कार्यकरण की नियमित रूप से समीक्षा करता रहता है जिसमें यह पता चला है कि संग्रहालय अपने कर्त्तव्यों का संतोषजनक रूप से निर्वहन करता है।

सालारजंग संग्रहालय, हैदराबाद

सालारजंग संग्रहालय, हैदराबाद 16 दिसम्बर, 1951 को अस्तित्व में आया। यह संग्रहालय 1961 में संसद के एक अधिनियम द्वारा घोषित राष्ट्रीय महत्व का संस्थान है। यह विविध यूरोपीयाई, एशियाई तथा विश्व के सुदूर पूर्वी देशों की कलात्मक उपलब्धियों का भंडार है। इस संग्रह का प्रमुख भाग सालारजंग–III के नाम से प्रसिद्ध नवाब मीर युसुफ अली खान द्वारा अधिगृहीत किया गया था। इस संग्रहालय में न केवल भारतीय मूल की कला कृतियों और प्राचीन वस्तुओं का बढ़िया संग्रह है बल्कि पश्चिमी, मध्यपूर्वी और पूर्व के दूर–दराज के क्षेत्रों का भी अच्छा संग्रह है। इसके अतिरिक्त एक बाल खण्ड है, एक समृद्ध संदर्भ पुस्तकालय जिसमें संदर्भ पुस्तके है जो कि शिक्षा के लिए एक समृद्ध भण्डार है। आज की तिथि के अनुसार संग्रहालय में तीन ब्लॉकों अर्थात् (1) भारतीय ब्लॉक (25 गैलरियां) (2) दुर्लभ पाण्डुलिपियों का बड़ा पश्चिमी संग्रह है। इसलिए यह संग्रहालय न केवल मनोरंजन के एक स्थान के रूप में बल्कि एक ब्लॉक के रूप में लोकप्रिय हो गया है (7 गैलरियां) (3) पश्चिमी ब्लॉक (5 गैलरियां)जिसमें 13404 वस्तुएं प्रदर्शित की गई है। कुल मिलाकर संग्रहालय में 37 गैलरियां है। वर्ष 2010–11 के दौरान संग्रहालय द्वारा विभिन्न अवसरों पर 18 विशेष प्रदर्शनियों, सेमिनारों, कार्यशालाओं, विशेष व्याख्यानों, मोबाईल फोटो प्रदर्शनी इत्यादि का आयोजन किया गया। सभी वस्तुओं का डिजीटलीकरण और संरक्षित संग्रह की नेटवर्किंग पूरी की गई। संग्रहालय की रासायनिक संरक्षण प्रयोगशाला ने 5688 वस्तुओं तथा गैर वस्तुओं का उपचार किया; केन्द्रीय पश्चिमी और पूर्वी ब्लॉक में सी सी टी वी सुरक्षा प्रणाली का अधिष्ठापन पूरा किया गया। वाकिंग स्टिक और कॉईन्स गैलरी के लिए अभिकल्पन कार्य 2010–11 के दौरान प्रगति पर रहा। समीक्षधीन अवधि के दौरान संग्रहालय ने विभिन्न उत्सवों/अवसरों पर 19 प्रर्दशनियों का आयोजन किया। इस संग्रहालय को अप्रैल –दिसंबर 2011 की अवधि के दौरान 9,16,565 आगंतुकों तथा विदेशी मूल के 7258 आंगतुकों ने देखा। इस अवधि के दौरान संग्रहालय ने 2 कार्यशालओं, 7 मासिक व्याख्यानों इत्यादि का आयोजन किया। संग्रहालय की संरक्षण प्रयोगशाला ने संग्रहालय की 1177 कलाकृतियों और 704 गैर कलाकृतियों का रखरखाव किया। मंत्रालय नियमित रूप से संग्रहालय के निष्पादन की समीक्षा करता रहा है और यह देखा गया है कि यह सही दिशा में कार्य कर रहा है।

विक्टोरिया मेमोरियल हॉल (वी एम एच), कोलकाता

विक्टोरिया मेमोरियल हॉल, जो राष्ट्रीय महत्व का संस्थान है, की स्थापना भारत–ब्रिटेन इतिहास पर विशेष बल के साथ 1903 के विक्टोरिया मेमोरियल अधिनियम के तहत की गई थी। इस मेमोरियल में जलरंगों, सिक्कों, मानचित्रों, अस्त्र–शस्त्रों, पांडुलिपियों आदि का विशाल भंडार है। जबकि प्रारंभिक संग्रह तथा प्रदर्शन के प्रबंधों को ब्रिटिश साम्राज्य की सामासिक प्रस्तुति के रूप में देखा जाता है, दूसरी ओर स्वतंत्रता के

बाद के संग्रह को भारतीय पहचान यानि राष्ट्रीय पहचान की खोज के रूप में देखा जा सकता है। वर्ष 2010–11 के दौरान मेमोरियल द्वारा शुरू किए गए प्रमुख कार्यकलापों में सेन्ट्रल हॉल तथा दरबार हॉल की बाहरी दीवारों की विशेष मरम्मत की गई तथा भवन की वार्षिक मरम्मत की गई। विभिन्न अवसरों पर 6 प्रदर्शनियां लगाई गई। उनमें भाग लिया गया। एम.एच–से पांच तैल चित्रों, त्रिपुरा राज्य संग्रहालय से एक तैल चित्र, चार प्राचीन फ्रेम उच्च न्यायलय से दो पुरातत्व फ्रेम एवं दो तैल चित्र, बर्दवान विश्वविद्यालय से 15 तैल चित्रों का जीर्णोद्धार संग्रहालय द्वारा किया गया। 12 विशेष व्याख्यान आयोजित किऐ गए। वर्ष 2011–12 के दौरान (दिसंबर 2011 तक) संग्रहालय ने रबीन्द्र भारती सोसाइटी संग्रह की 900 कला वस्तुओं का भौतिक सत्यापन एवं डिजिटीकरण किया तथा वी.एम.एच. की 6491 वस्तुओं का ब्यौरा जे.ए.टी.ए.एन डेटाबेस सॉफ्टवेयर में डाला गया। इसने भारत और विदेश से 33 छात्रवृत्तियों को भी सहायता प्रदान की। कला वस्तुओं/तैल/चित्रों/प्राचीन फ्रेम के रखरखाव से संबधित कार्य तथा इनका संरक्षण ज़ारी रहा। समीक्षाधीन अवधि के दौरान मैमोरियल ने कई सेमिनारों, व्याख्यानों, कार्यशालाओं और विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया। मार्ग फाउंडेशन मुम्बई के सहयोग से एमिल ओटो होप द्वारा 1929 से फोटोग्राफ की एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया तथा डॉ. प्रतापादित्य पॉल, जरनल अडिटर, मार्ग फाऊडेंशन द्वारा संपादित समथिंग ओल्ड, संमथिग न्यू– रबीन्द्र नाथ टैगोर 150 बर्थ एनिवर्सिरी वॉल्यूम पुस्तक का विमोचन किया गया। इस प्रदर्शनी को 16–4–2011 को सांय 6:30 बजे वी.एम.एच. में देखा गया। विक्टोरिया मैमोरियल हॉल ने सैंट्रल 'कैलकटा साईंस एण्ड कल्चरल आर्गनाईज़ेशन फॉर यूथ' द्वारा भैरव गांगुली कॉलेज मैदान, बौलगढ़िया, कोलकाता में '' इवोल्यूशन ऑफ इंडिया एज ए ग्रेट नेशन इन द 21 सेंचुरी'' शीर्षक पर 15वीं राष्ट्रीय प्रदर्शनी के आयेाजन में भाग लिया। वी.एम.एच. ने 20 से 29 दिसंबर 2011 को कुलतली, बसंती, पश्चिम बंगाल में वीएम.एच. के संग्रह की रचनाओं पर आधारित यामिनी रॉय को चित्रों की एक प्रदर्शनी लगाकर कुलतली मिलन तीर्थ सोसाइटी द्वारा आयोजित सुंदर बन क्रिस्टी मेलॉओ–लोक संस्कृति उत्सव 2011 में भाग लिया। मंत्रालय वी.एम.एच. के निष्पादन का नियमित रूप से मानिटरिंग करता रहा है और यह पाया गया कि वी.एम.एच. दिशा में कार्य कर रहा है।

इलाहाबाद संग्रहालय, इलाहाबाद

इलाहाबाद संग्रहालय की स्थापना, इलाहाबाद नगर पालिका बोर्ड के तहत् 1931 में की गई थी। 1985 में इसे राष्ट्रीय महत्व का संस्थान घोषित किया गया। समीक्षाधीन अवधि के दौरान, संग्रहालय का कलाकृतियों तथा प्रकाशनों के अधिग्रहण संबंधी कार्यक्रम जारी रहा। संग्रहालय ने

अवधि के दौरान अनेक कला प्रदर्शनियाँ आयोजित कीं। लोगों विशेषतः विद्यार्थियों के लाभार्थ विधिवत् रूप से शैक्षिक तथा सांस्कृतिक कार्यकलाप आयोजित किए गए। संग्रहालय ने निजी स्कूलों और कॉलेजों तथा जवाहर नवोदय विद्यालयों में संग्रहालय कॉर्नर स्थापित करने के लिए प्रतिकृतियों का निर्माण किया। संग्रहालय ने व्यापक स्तर पर आरक्षित संग्रह के पुनर्गठन का कार्य शुरू किया है। दर्शको तथा विद्यार्थियों को संग्रहालय संग्रह में त्वरित सुगमता प्रदान करने के लिए संग्रहालय में कियोस्क स्थापित किए गए हैं। वर्ष 2010–11 के दौरान संग्रहालय ने विभिन्न विषयों पर 50 पुस्तकें अर्जित की और उन पर प्राप्ति क्रमांक डाला। 600 पुस्तकों को वर्गीकृत और सूचिबद्ध किया गया । वर्ष के दौरान कुल 522 वस्तुओं, जिसमें 70 पत्थर की मूर्तियां, 10 चित्र, 300 पाण्डुलिपियां, 110 कांस्य एंव अन्य धातु, की वस्तुएं ष्शामिल हैं, के संरक्षण के अलावा 25 पुरातत्तवीय दस्तावे़ज पर भी कार्य शुरू किया गया। अर्जित की गई नई वस्तुओं, पुरस्कृत चित्रों/क्ले मॉडलिंग इत्यादि की तीन प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय सूचना विभाग, इलाहबाद के सहयोग से संग्रहालय द्वारा 27 फरवरी 2011 को अकबर इलाहबादीः समय और चुनौतियां शीर्षक पर एक राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया गया। वर्ष 2011–12 में (अप्रैल–दिसंबर 11) संग्रहालय ने तीन प्रकाशन निकाले और सात व्याख्यानों/ मैमोरियल लैक्चर/राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किये। संग्रहालय ने 14–11–2011 –26–11–2011 को ''भारत और इलाहबाद के स्मारक'' पर एक प्रदर्शनी लगाई। मंत्रालय निरन्तर संग्रहालय के निष्पादन व कार्यकरण की निगरानी करता आ रहा है।

राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान : कला इतिहास, संरक्षण एवं संग्रहालय विज्ञान (एन एम आई), नई दिल्ली

इस संस्थान की स्थापना सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम 1860 के तहत की गई तथा इसे 27.01.1989 को पंजीकृत किया गया। इसे 28 अप्रैल, 1989 को भारत सरकार द्वारा विश्वविद्यालयवत का दर्जा दिया गया। संस्थान का मुख्य उद्देश्य कला इतिहास, संरक्षण तथा संग्रहालय विज्ञान आदि की विभिन्न शाखाओं में अध्ययन, प्रशिक्षण तथा अनुसंधान के विभिन्न पाठ्यक्रम चलाना है। संस्थान कला इतिहास संरक्षण तथा संग्रहालय विज्ञान के क्षेत्र में एम. ए. तथा पी. एच. डी. के पाठ्यक्रम चलाता है तथा उपाधियां देता है। वर्ष 2010–11 के दौरान, 45 विद्यार्थियों में से एम.ए. पाठ्यक्रम में 10 विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए और 6 विद्यार्थियों ने पी.एच.डी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। समीक्षाधीन अवधि के दौरान लगभग 200 छात्रों ने अल्पकालिक पाठ्यक्रमों में भाग लिया । एक अंर्तराष्ट्रीय संगोष्ठी तथा चार राष्ट्रीय सेमिनारों/कार्य शालाओं/प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयेाजन किया गया तथा चार विशेष व्याख्यानों का संचालन किया गया। वर्ष 2011–12 के दौरान (दिसंबर 2011 तक) एन.एम. आई. द्वारा स्वंतत्र रूप से अथवा अन्य संगठनों/संस्थानों के सहयोग में आठ कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं में ''प्रिवेंटिव केयर ऑफ

मेटल्स इन एण्ड आउटडोर कलेक्शनस पर भारत आस्ट्रेयाई कार्यशाला; जी.ओ.––''ए बी बालिका'', नई दिल्ली; ''टीचर रिर्सोस पैक''; ''रिसेंट ट्रैड्स इन कंज़रवेशन''; ''केजरवेशन ऑफ स्टोन एण्ड सिरेमिक आब्जैक्टस्''; ''क्म्यूनिकेशन एण्ड इंटरप्रेटेशन इन द म्यूज़ियम्स'' इत्यादि ष्शामिल है। एन. एम.आई. के अधिकारियों और नेशनल सेंटर फॉर डाक्यूमेंटेशन एण्ड रिसर्च (एन.सी.डी.आर.), आबूधाबी, यू.ए.ई. के अधिकारियों के बीच एक बैठक आयोजित की गई जिसमें दोनों संगठनों के बीच सहयोग की संभावनाओं पर विचार किया गया। इसकी ष्शुरूआत से मंत्रालय नियमित रूप से इसकी समीक्षा करता रहा है। यह पाया गया कि संस्थान ने विशेषीकृत क्षेत्र के एक शैक्षिक संस्थान के रूप में अपने कर्त्तव्य का निर्वहन किया है।

राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद, कोलकाता

राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद (एन सी एस एम), जो 4 अप्रैल 1978 को अस्तित्व में आई, की स्थापना समाज के लाभार्थ देश में नये विज्ञान शहरों के प्रचालन, अनुरक्षण तथा विकास के उद्देश्य से की गई थी। इसके मुख्य कार्यकलाप विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास और उद्योग तथा मानव कल्याण में उसके उपयोग की दिशा में अभिप्रेत हैं। अन्य मुख्य कार्यकलाप स्कूलों तथा कॉलेज विद्यार्थियों के लिए प्रदर्शनियाँ, सेमिनार, लोकप्रिय व्याख्यान, विज्ञान शिविर तथा विभिन्न अन्य कार्यकलाप आयोजित करके विद्यार्थियों तथा आम व्यक्ति के अलावा शहरों तथा ग्रामीण क्षेत्रों में विज्ञान और प्राद्योगिकी को लोकप्रिय बनाना है। वर्तमान में यह परिषद संस्कृति मंत्रालय से जुड़ा हुआ है। गत तीन दशकों में एन सी एस एम ने अपने प्रशासनिक नियंत्रण ने देश में' 25 विज्ञान संग्रहालय और विज्ञान केद्रों का बड़ा नेटवर्क स्थापित किया गया है। परिषद को अपने व्यापक नवोन्येयक विज्ञान संचार कार्यकलापों के लिए विश्व के सभी भागों में सम्मान एंव आकर्षण अर्जित किया है। वर्ष 2010–11 के दौरान आर सी, रांची तथा आर एस सी,रायपुर का विवरण पूरा किया गया और आर एस सी, कोयंबटूर; आर एस.सी. पीलीकूला, आर.एस.सी. जयपुर; एस.आर.एस. सी ज़ोरहॉट, विज्ञान केंद्र, पी.सी.एम.सी पुणे, एस आर एस.सी जोधपुर, एस.आर.एस. सी.पुाडुचेरी, आर.एस.सी. देहरादून में कार्य प्रगति पर है। वर्ष के दौरान कई नई गैलरियों तथा विभिन्न विज्ञान केद्रों की गैलरियों के पुनरूद्धार का कार्य पूरा किया गया तथा शेष विज्ञान केंद्रों पर कुछ पुनरूद्धार कार्य प्रगति पर है। एनसीएमम ने तीन अन्य यात्रा प्रदर्शनियाँ तथा कई प्रमुख शैक्षिक कार्यक्रमों, जिसमें लेजर शो, विज्ञान मेले, विज्ञान सेमिनार, नाट्य उत्सव इत्यादि शामिल है, का आयोजन किया। वर्ष 2011–12 के दौरान (दिसंबर 2011 तक) धारवाड़ और रायपुर में क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र शुभांरभ के लिए तैयार है। कोयंबटूर, पीलीकुला, पी.सी एन.सी., पुणे, जयपुर, देहरादूर में आर.एस. सी. तथा ज़ोरहाट, जोधपुर और पुडुचेरी में

उपक्षेत्रीय विज्ञान केद्रों (एस. आर. एस.सी) का स्थापना कार्य प्रगति पर है। बारहगढ़ उड़ीसा; जम्मू और कश्मीर, मैसूर, कर्नाटक, उदयपुर, त्रिपुरा, चण्डीगढ़, अम्बाला और राजा मुंद्री, आध्रंप्रदेश में विज्ञान केद्रों की स्थापना संबंधी कार्य कार्यान्वयन में है। एन.सी.एस.एम. ने आर.एस.सी गुवाहाटी में ''फनसाईंस'' एन.एस.सी मुम्बई में ''हॉल ऑफ दी हिस्टोरिकल लाईफ'', डी एस.सी. पुरूलिया में '' चिल्ड्रंस गैलरी'', एन.एस.सी मुम्बई में ''हॉल ऑफ न्यूक्लीयर पॉवर'' इत्यादि सहित कई नई गैलरियों का विकास किया/स्थापित की। समीक्षाधीन अवधि के दौरान परिषद ने 8 विज्ञान केद्रों में नई सुविधाऐं प्रदान की तथा 7 नई यात्रा प्रदशनियाँ शुरू की और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग कार्यक्रमों में भाग लिया, अन्य संस्थानों के उत्प्रेरक सहायता दी, ''प्राशिक्षण कार्यक्रमों/कार्यशालाओं का आयोजन किया तथा परिषद के अनुसंधान एवं विकास के अंतर्गत साफ्टवेयर एवं नए प्रदर्शों का विकासके अंतर्गत साफ्टवेयर एवं नए प्रदर्शों का विकास किया। मंत्रालय परिषद के निष्पादन को नियमित रूप से समीक्षा करता आ रहा है और यह पाया गया है कि राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद तथा विज्ञान केंद्र बहुत ही सराहनीय कार्य कर रहे है।

पुस्तकालय

पुस्तकालय वर्तमान और भावी पीढ़ी के लिए भी ज्ञान की सामग्री के वृहत् भंडार होते हैं। सदियों पुरानी बहुमूल्य पुस्तकों और पांडुलिपियों तथा साथ ही आधुनिक मुद्रित सामग्री को जनता के उपयोग के लिए पुस्तकालयों में रखा जाता है। पुस्तकालय का एक कार्य लोगों विशेषतः विद्यार्थियों तथा युवाओं में पढ़ने की आदत डालना भी है। ये बहुमूल्य पुस्तकें और पांडुलिपियाँ, जिन्हें बनाने में वर्षों लगे हैं, को आगामी पीढ़ियों के लिए परिरक्षित और संरक्षित किया जाना है क्योंकि ये हमारी सांस्कृतिक विरासत का भाग है। मंत्रालय के प्रमुख पुस्तकालय इस प्रकार हैं :

राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान

राजा राम मोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान (आर आर आर एल एफ) संस्कृति मंत्रालय के तहत् एक स्वायत्त संगठन है जिसकी स्थापना इस महान राजा की द्विशताब्दी जयंती के अवसर पर मई 1972 में की गई थी , जो पुनर्जागरण और आधुनिक काल में अग्रणी रहे तथा जिन्होंने हमारे देश में शिक्षा के प्रचार के लिए अत्यधिक कार्य किया। इस प्रतिष्ठान का मुख्य उद्देश्य राज्य पुस्तकालय प्राधिकरणों, संघ राज्य क्षेत्रों और पुस्तकालय सेवाओं के क्षेत्र में कार्य कर रहे स्वैच्छिक संगठनों के सक्रिय सहयोग के साथ विशेष रूप सेग्रामीण क्षेत्रों मेंपढ़ने की आदत को

लोकप्रिय बनाकर और पर्याप्त पुस्तकालय सेवाएं देकर देश में सार्वजनिक पुस्तकालय को सहायता तथा बढ़ावा देना हैं। अपने सीमित संसाधनों के साथ आर.आर.एल.एफ. दो प्रकार की योजनाओं–मैचिंग एंव नॉन मैचिंग के कार्यान्वयन के साथ पूरे देश में पुस्तकालय सेवाओं का विकास तथा पुस्ताकलय अभियान को बढ़ावा दे रहा है। वर्ष 2011–12 के दौरान, प्रतिष्ठान द्वारा मैचिंग और गैर–मैचिंग स्कीमों के अधीन, संपूर्ण देश के विभिन्न पुस्तकालयों के 16000 से अधिक पुस्तकालयों को सहायता प्रदान की गई थी। यह प्रतिष्ठान विभिन्न पुस्तकालयों/संगठनों को पुस्तकों का स्टाक बढ़ाने, सचल पुस्तकालय और ग्रामीण पुस्तक जमा केंद्र के आयोजन के लिए, स्थान के विस्तार, सेमिनार/कार्यशालाओं/पुस्तक प्रदर्शनियों के आयोजन, टीवी–सह–वीसीपीसैट के अर्जन, बाल–कार्नर और विकलांग–कार्नर की स्थापना के लिए अनुदान प्रदान करता रहा है। वर्ष 2012–13 के दौरान (दिसंबर, 2012 तक) मैचिंग और गैर–मैचिंग स्कीमों के अधीन, 13000 से अधिक पुस्तकालयों के लिए प्रतिष्ठान द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान की गई है। इसके अतिरिक्त, अब तक 32 संगठनों को, सेमिनारों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं आदि जैसे जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन करने के उद्देश्य से सहायता प्रदान की गई है। राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान ने, पुस्तकालयों के पुस्तकों के संग्रह करने के कार्यक्रम के तहत 45 मिलियन पुस्तकों का स्टाक करने के लिए सहायता की। इसके अलावा, यह प्रतिष्ठान पुस्तकों के भंडारण, स्थानों के विस्तार, सभी उद्देश्यों के लिए शिक्षा/कंप्यूटर पुस्तकालय अल्पीकेशन आदि के लिए टीवी–सह–वीसीपी सेटों का अर्जन करने हेतु सहायता करता है। मंत्रालय, आरआरएफ के निष्पादन तथा कार्यकलापों की निरंतर निगरानी करता रहा है। आरआरआरएलएफ ने, वर्ष 2012–13 के दौरान पुस्तकालयों के प्रशासनिक कार्य जिसको उच्च स्तरीय राष्ट्रीय मिशन के नाम से जाना जाता है में भी सहायता प्रदान की।

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी की स्थापना 1951 में दिल्ली में प्रायोगिक पुस्तकालय परियोजना के तहत की गई थी। लाइब्रेरी का मुख्य उद्देश्य दिल्ली के लोगों को सार्वजनिक पुस्तकालय सेवा तथा लोकप्रिय शिक्षा के लिए एक सामुदायिक केन्द्र प्रदान करना है जो भारत में सभी सार्वजनिक पुस्तकालय विकास हेतु माडल का कार्य कर सके और पड़ोसी देशों को सलाहकार संबंधी सेवाएं प्रदान कर सके। दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी का केन्द्रीय पुस्तकालय, क्षेत्रीय पुस्तकालय, 3 शाखा पुस्तकालयों, 23 उप शाखा पुस्तकालयों, 12 पुनर्वास कालोनी पुस्तकालयों, 3 सामुदायिक पुस्तकालयों, दृष्टिहीनों के लिए एक ब्रेल पुस्तकालय, 73 सचल सेवा स्थलों तथा राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में 22 डिपाजिट स्टेशनों का विशाल नेटवर्क है। वर्ष 2011–12 के दौरान डी.पी.एल. ने अपने संग्रह में लगभग 37830 पुस्तकों और 377 डीवीडी की बढ़ोत्तरी की है। वर्ष के दौरान, जिल्दसाजों

द्वारा 2340 पुस्तकों की जिल्दसाजी की गई और पुस्तकालय के सघन प्रयासों के कारण सदस्यों की संख्या 76548 तक बढ़ गई। पुस्तकालय की अवसंरचनात्मक मदें, जैसे–ए.सी, कूलर, फर्नीचर और गणना टेबलों को पुस्तकालय के सदस्यों और कर्मचारियों के लाभ के लिए क्रय किया गया। मध्य पुस्तकालय के अग्रभाग के नवीनीकरण के कार्य और सरोजनी नगर भवन के प्रथम और द्वितीय तल के कार्य भी, समीक्षाधीन वर्ष में पूरे हो गए। वर्ष 2012–13 (दिसंबर, 2012 तक) के दौरान, लगभग 10735 पुस्तकों और 101 डीवीडी का क्रय किया गया। डीपीएल की 6 इकाइयां, जिनमें करोल बाग, विनोबा पुरी, जनक पुरी, नरेला, आर के पुरम (सैक्टर–8) और शाहदरा पुस्तकालय शामिल है, को नि : शुल्क इंटरनेट सेवाएं प्रदान करने के अतिरिक्त, डीपीएल ने सांत्वना, शिक्षण और कौशल कार्यक्रमों आदि के भी आयोजन सरोजनी नगर पुस्तकालय में ग्रीष्मावकाश के दौरान आयोजित किए गए।

अभिलेखीय पुस्तकालय

एशियाटिक सोसायटी, कोलकाता

1984 में भारत सरकार ने संसद के अधिनियम द्वारा एशियाटिक सोसायटी, कोलकाता को राष्ट्रीय महत्व का संस्थान घोषित किया है। अब एशियाटिक सोसायटी, कोलकाता संस्कृति मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त संस्थान है। इसका मुख्य उद्येश्य भाषा, साहित्य, संस्कृति तथा सामाजिक आर्थिक पहलुओं के संबंध में अनुसांधान परियोजनाएं शुरू करना है। यह संस्थान इस उप महाद्वीप में कलात्मक तथा बौद्धिक, दोनों ही, संस्कृतियों की सामग्रियों का सबसे पुराना भंडार है। इसमें हिन्दू तथा मुस्लिम कालों की दुर्लभ तथा बहुमूल्य पुस्तकों, प्राचीन पांडुलिपियों, तैल चित्रों, सिक्कों आदि का विशाल संग्रह है। सोसायटी का पुस्तकालय–तंत्र के विकास, संग्रहालय और इसकी उपभोक्ता सुविधाओं के विकास, अनुसंधान संवर्धन तथा प्रकाशन से संबंधित कार्यक्रम हैं। यह संस्थान पूर्वोत्तर क्षेत्र में अनुसंधान परियोजनाएं भी चलाता है। वर्ष 2011–12 के दौरान, एशियाटिक सोसायटी ने अनुसंधान परियोजनाओं के तहत 29 परियोजनाओं को प्रारंभ किया, जिनमें, सोसायटी द्वारा वित्त पोषित 17 बाहरी परियोजनाएं शामिल थीं। इसने, 7 सेमिनार जिनमें अंतरराष्ट्रीय सेमिनार शामिल थे, 22 व्याख्यान और 4 प्रदर्शनियों/कार्यशालाओं के आयोजन किए। एशियाटिक सोसायटी ने 15 पुस्तकें, 4 जर्नल, 10 मासिक बुलेटिन और 6 पुस्तिकाओं का प्रकाशन वर्ष 2011–12 में किया। इसने पुस्तकों और जर्नलों का अर्जन भी किया और दुर्लभ पुस्तकों तथा मोनोग्राफों का परिरक्षण और अनुरक्षण भी किया। रेप्रोग्रैफिक इकाई के तहत, दुर्लभ पुस्तकों और पांडुलिपियों का प्रलेखन चलता रहा। वर्ष 2012–13 (दिसंबर, 2012 तक) के दौरान, सोसायटी ने 6 पुस्तकें प्रकाशित की हैं, जिनमें रि–प्रिंट, 2

जर्नल, 7 मासिक बुलेटिन और दिसंबर, 2012 तक 5 पुस्तिकाएं शामिल हैं। अनुसंधान कार्यक्रम की वृद्धि के तहत, इसने 20 परियोजनाओं को प्रारंभ किया है, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों की 17 बाहरी परियोजनाएं शामिल हैं। समीक्षाधीन रिपोर्ट के दौरान, इसने 3 सेमिनार 17 व्याख्यान आयोजित किए। सोसायटी ने दुर्लभ पुस्तकों के संरक्षण और परिरक्षण, पुस्तकालय-प्रणाली के विकास, संग्रहालय का विकास और प्रयोक्त सुविधाओं के आदि के क्षेत्रों के कार्यक्रमों को जारी रखा है। मंत्रालय द्वारा विगत कुछ वर्षों के कार्य-निष्पादन की समीक्षा के संकेत मिला है कि एशियाटिक सोसाटी उन विद्वानों, अनुसंधान अध्येता और आम जनता को मूल्यांकन सेवा प्रदान करती रही है जो दुलर्भ पांडुलिपियों, पुस्तकों और पेंटिंग में रूचि रखते हैं। वर्ष 2012-13 के दौरान, विभिन्न प्रशासनिक और वित्तीय पहलुओं से सोसाइटी की समीक्षा और कार्रवाई की गई है।

खुदा बख़्श ओरियंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना

खुदा बख़्श ओरियंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना संस्कृति मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त संस्थान है। दिसम्बर, 1969 में इसे संसद के अधिनियम द्वारा राष्ट्रीय महत्व का संस्थान घोषित किया गया और जुलाई, 1970 से इसने भारत सरकार द्वारा गठित बोर्ड द्वारा शासित एवं स्वायत्त संस्थान के रूप में कार्य किया है। इसमें पत्रिकाओं सहित विभिन्न 21,000 पांडुलिपियाँ तथा 2,80,000 से अधिक मुद्रित पुस्तकें और मुगल, राजपूत औध, ईरान तथा टर्की स्कूलों के लगभग 2000 मूल पेन्टिंग्स का समृद्ध संग्रह हैं। वर्ष 2011-12 के दौरान 4110 पुस्तकें तथा 13 पाण्डुलिपियों को अधिग्रहित किया गया। इसके अतिरिक्त लगभग 87 पत्रिकाओं के अंक तथा 24 समाचार पत्रों को अधिगृहीत किया गया। पाठकों के प्रयोग के लिए 94 श्रव्य-दृश्य कैसेट भी क्रय किए गए। 9 पुस्तकें भी प्रकाशित की गई। पुस्तकालय ने, अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अतिरिक्त, 3 सेमिनार, 1 वार्षिक व्याख्यान, 3 विस्तार व्याख्यान, 4 लोकप्रिय व्याख्यान, 1 प्रदर्शनी और 1 मुशायरे के आयोजन किए। अनुबंध के आधार पर 250 पुस्तकों और पांडुलिपियों की जिल्दसाजी कराई गई। एनआईसीएसआई द्वारा पांडुलिपियों के 10 लाख पृष्ठों की पाइलेट परियोजना पूरी हो गई। पुस्तकालय भवन के सुधार और स्तरोन्नयन का कार्य भी शौचालय के नवीकरण, नए प्रशासनिक खंड के निर्माण कार्य जो वर्ष 2011-12 में प्रारंभ किया गया था, का कार्य भी प्रांरभ किया गया। वर्ष 2012-13 के दौरान (दिसंबर, 2012 तक), पुस्तकालय ने अतिरिक्त 2492 पुस्तकें, 20 पांडुलिपियां, 93 पत्रिकाएं और 23 समाचार-पत्रों का अर्जन, समीक्षाधीन रिपोर्ट के दौरान किया है। पुस्तकायल द्वारा 1 पुस्तक का प्रकाशन भी किया गया। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, 5 सेमिनार, 1 वार्षिक व्याख्यान, 3 विस्तार व्याख्यान, 1 लोकप्रिय व्याख्यान, 1

मुशायरा, 2 प्रदर्शनियां और अन्य कार्यक्रमों के आयोजन के बीओपीएल द्वारा किए गए। तिमाही जर्नल के 3 अंकों का भी प्रकाशन किया गय। 48 पांडुलिपियां और 331 मुद्रित पुस्तकों की जिल्दसाजी अनुबंध के आधार पर कराई गई। मंत्रालय द्वारा, इस पुस्तकालय के कार्य–निष्पादन की समीक्षा करने पर मंत्रालय ने पाया कि इस पुस्तकालय को प्रदान की गई धनराशि, इसकी उपलब्धियों/परिणामों के अनुरूप है।

रामपुर रज़ा पुस्तकालय

अर्तराष्ट्रीय रूप से प्रसिद्ध (रामपुर रज़ा पुस्तकालय 1774 में रामपुर स्टेट के नवाब फैजुल्ला ख़ान द्वारा बनाया गया था। इस पुस्तकालय को सन् 1975 में भारत सरकार द्वारा अपने नियंत्रण में ले लिया गया था। यह संस्कृति मंत्रालय के अंर्तगत रामपुर रज़ा पुस्तकालय बोर्ड द्वारा चलाया जा रहा है जिसके अध्यक्ष उत्तर प्रेदश के राज्यपाल हैं। इसमें 150 सचित्र पाण्डुलिपियों सहित 17000 पाण्डुलिपियों, 205 ताणपत्र पाण्डुलिपियाँ, 5000 लधु चित्र, 3000 इस्लाम सुलेख के नमूने तथा 60,000 दुर्लभ मुद्रित पुस्तकों का संग्रह है। इस पुस्तकालय में पुरातत्व, भाषायी एंव लिपियों का संग्रह है जैसे अरबी, फारसी, संस्कृत, हिन्दी उर्दू, तुर्की तथा पश्तों इत्यादि। ये विभिन्न विषयों जैसे इतिहास, दर्शनशास्त्र, ख्गोल विज्ञान, खगोल मिति, गणित, चिकित्सा भौतिक विज्ञान, सूफ़ीवाद, साहित्य, कला, और वास्तुकला, से सबंधित है। लधु चित्र तुर्क मंगोल, मुग़ल, फारसी, राजपूत, पहाड़ी अवध, दकड्डनि और भारत यूरोपीय स्कूल को दर्शाती है जिनके नमुने अभी तक प्रकाशित नहीं किऐ गऐ है। इस पुस्तकालय ने विभिन्न भाषाओं में 140 पुस्तकें प्रकाशित की है और शिक्षाविदों के लिए अपनी स्वंय की वैबसाईट भी शुरू की है। यह पुस्तकालय विरासत महल नामतः हामिद मंजिल में स्थित है जो कि 100 से अधिक साल पुराना है और जिसका भारत यूरोपीय शैली का भव्य वास्तुशिल्प उत्तर भारत में अद्वितीय है, और यह 17वीं एवं 18वीं शताब्दी की इतालवी मार्बल मूर्तियों से सुसज्जित है। इसकी दिवारों, धरती तथा कार्निसो'' पर प्लास्टर ऑफ पेरिस पर सोने की परत चढ़ाई गई है। वर्ष 2011–12 के दौरान, पुस्तकालय ने 2 पुस्तकों का प्रकाशन और पांडुलिपियों के 1464 पृष्ठों, मुद्रित पुस्तकों के 1444 पृष्ठों का संरक्षण, 9 सुलेख कलाओं और पांडुलिपियों का धूमीकरण और वैज्ञानिक भंडारण किया। 244 दुर्लभ पुस्तकें क्रय की गईं। 6 छात्रवृत्तियां प्रदान की गई और 2 छात्रवृत्तियां अरबी और फारसी पांडुलिपियों के अनुवाद के लिए प्रदान की गईं। पुस्तकालय ने 2 प्रदर्शनियों और 1 सेमिनार का आयोजन कियाा। इसने अंकीकरण से संबंधित 1.20 लाख पृष्ठों के कार्य को भी प्रारंभ किया।

वर्ष 2011–12 के दौरान, 12,76 सुरक्षा गार्डो। को रज़ा पुस्तकालय में प्रतिनियुक्त किया गया। वर्ष 2012–13 (दिसंबर, 2012 तक) के दौरान, पुस्तकालय ने 3 पुस्तकों का प्रकाशन किया है और शेष अभी प्रकाशनाधीन प्रेस में हैं। दो विरासत भवनों के परिरक्षण और नवीकरण तहत, विशेष मरम्मत और छोटी मरम्मत के कार्य किए गए हैं, जिसमें विशेष प्रकृति के वैज्ञानिक मरम्मत शामिल है। पुस्तकालय द्वारा 24 पुस्तकों की खरीद की गई है 45 अनुवादकों को अरबी और फारसी की पांडुलिपियों और अन्य भारतीय भाषाओं की पांडुलिपियों का अंग्रेजी में अनुवाद करने का कार्य गत दो वर्षो के दौरान, मंत्राल द्वारा की गई समीक्षाओं से मूल्यांकन हुआ कि यह पुस्तकालय, अपने कार्य को करने में सफल रहा है।

मानव विज्ञान

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय (आई जी आर एम एस), भोपाल

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय (आई जी आर एम एस) संस्कृति मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त निकाय है जो समय और स्थान में मनुष्य की कहानी को चित्रित करने के प्रति समर्पित है। आई जी आर एम एस भारत में एक नए संग्रहालय अभियान का सृजन करने से जुड़ा है जो प्रयत्न के लिए मानव संस्कृतियों की वैधता और बहुलकता को प्रदर्शित करता है। आई जी आर एम एस का मुख्यालय भोपाल, मध्यप्रदेश में स्थित है जबकि इसका एक क्षेत्रीय केंद्रं मैसूर (कर्नाटक) में कार्य कर रहा है। आई जी आर एम एस का तीन उपयोजनाओं नामतः (क) अवसंरचना विकास (संग्रहालय परिसर का विकास), (ख) शिक्षा और आऊटरीच, और (ग) ऑपरेश्न सॉल्वेज के साथ ज़ारी व्यापक योजना के रूप में विकसित किया जा रहा है। अन्य ष्शब्दों में आई जी आर एम एस शिक्षा और आऊटरीच गतिविधियों के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक जीवन की एकता और विविधता का बचाव, परिरक्षण और संरक्षण करने के लिए अपनी भौतिक अवसंरचना का विकास करता है। अपने शिक्षा और आउटरीच कार्यक्रमों के तहत, संग्रहालय, पंजीकृत भागीदारों के लिए पारंपरिक कलाकारों को निमंत्रित करके, संग्रहालय विज्ञान, नृ–विज्ञान, कला, वास्तुकला, प्रागैतिहासिक और वैश्विक स्तर के वर्तमान मुद्दों के विषयों पर सेमिनार, संगोष्ठी और समूह–वार्ताओं के आयोजन करके प्रशिक्षण–सह–प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित करता है, ये आयोजन, विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दिवसों के समारोह में किए जाते हैं। संग्रहालय, आम जनता में राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक जागरूकता के सुदृढ़ीकरण में भी संलग्न है, जिसके लिए यह विभिन्न राज्यों के कलाकारों को रंगमंच कला प्रस्तुतियों के

आयोजन विभिन्न अन्य स्थानों पर करता है, जिससे एक सांस्कृतिक समझ का निर्माण किया जा सके। इस संबंध में आईजीआरएमएस, समाज के विभिन्न अंचलों में कलाकार शिविर, कार्यशाला, विशेष कार्यक्रम और समारोह आयोजि करता है। इस अवधि, अर्थात् 2011–12 और 2012–13 में, गारो, भोटिया के पारंपरिक निवास–स्थान और गारो समुदाय जैसी बहुत सी नई प्रदर्शनियों का निर्माण उस समय किया गया था जब बस्तर की एक प्रदर्श 'दशहरा रथ' का पुर्नस्थापन एक मुक्ताकाश प्रदर्शनी में किया गया था, मधुबनी , बिहार से पारंपरिक प्रौद्योगिकी से संबंधित प्रदर्श स्थापित किए गए, आंध्र प्रदेश के प्रदर्शों का पुर्न स्थापन, पारंपरिक प्रौद्योगिकी मुक्ताकाश प्रदर्शनी में किया गयौ वर्ष 2011–12 के दौरान, संग्रहालय लगभग 876 जातीय नमूने, 2818 स्लाइडें/फोटोप्रिंट्स, दृश्य–श्रव्य रिकार्डिंग के 230 से अधिक घंटे भारतीय/विदेशी जर्नलों 610 भाग और 483 पुस्तकों की वृद्धि अपने संग्रहायल में की।

वर्ष 2012–13 के दौरान संग्रहालय ने लगभग 686 नृवंशविज्ञान नमूने, 4393 स्लाइड/फोटो प्रिंट, 170 घंटे से अधिक की दृश्य–श्रव्य रिकार्डिंग, भारतीय/विदेशी जर्नलों के 590 खंड तथा 410 पुस्तकालयी पुस्तकें अपने संग्रह में जोड़ी।

बौद्ध एवं तिब्बती अध्ययन विकास संस्थान

बौद्ध एवं तिब्बती अध्ययन के विकास हेतु संस्कृति मंत्रालय के तीन स्वायत्त संस्थान नामतः केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह, केन्द्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान, सारनाथ, वाराणसी और नव नालंदा महाविहार, बिहार और हिमालयी सांस्कृतिक अध्ययन, दाहुंग हैं। ये संस्थान अपने शैक्षिक, अनुसंधान कार्यक्रमों तथा अन्य सम्बद्ध कार्यकलापों/कार्यक्रमों के माध्यम से बौद्ध/तिब्बती तथा पाली अध्ययनों के विकास को बढ़ावा देते हैं।

केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान (सी आई बी एस), लेह

यह संस्थान लद्दाख, जो मूलतः बौद्ध स्थल भी है, में बौद्ध संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। लद्दाख का क्षेत्र चीन और पाकिस्तान की सीमाओं से लगता है और इसीलिए यह न केवल सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है अपितु संवेदनशील भी है। सी आई बी एस का मुख्य उद्देश्य आधुनिक विषयों की जानकारी के साथ बौद्ध विचारों, साहित्य तथा कलाओं की जानकारी पैदा करके विद्यार्थियों के बहुआयामी

व्यक्तित्व का विकास करना है। संस्थान का मुख्य बल भोति (तिब्बती) भाषा में बौद्ध दर्शन पढ़ाने का है, तथापि, विद्यार्थियों के ज्ञान क्षितिज को बढ़ाने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए अन्य विषय जैसे – हिंदी, अंग्रेजी, सामान्य विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, गणित, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान तथा इतिहास भी पढ़ाए जाते हैं। इसके अलावा, क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए आमची (भोत चिकित्सा), तिब्बती स्क्रोल पेंटिंग, मूर्तिकला और नक्काशी में रूचि रखने वाले छात्रों के लिए छह वर्षीय पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। संस्थान का पुस्तकालय भोति, संस्कृत, पाली आदि भाषाओं सहित विभिन्न भाषाओं में 28,500 पुस्तकों के संग्रह के साथ पूरे बौद्ध हिमालयी क्षेत्र में एक सर्वोत्तम पुस्तकालय है। चारदीवारी, पहुँच और आंतरिक सड़क, अकादमिक भवन पुस्तकालय भवन, प्रशासनिक खण्ड, 100 छात्रों की क्षमता वाले तीन हॉस्टल, क्रीड़ा स्थल तथा प्रवेश द्वार के निर्माण कार्य को पहले ही पूरा किया जा चुका है। सभागार का निर्माण कार्य तथा स्थल विकास कार्य प्रगति पर है। इस क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संजोए रखने के अतिरिक्त यह संस्थान सोवा रिग्या (भोत चिकित्सा) में पाठ्यक्रम भी प्रदान करता है। वर्ष 2010–11 के दौरान पुराने परिसर में माध्यमिक शिक्षा के मध्य चरण में संस्थान में 307 विद्यार्थी और नए परिसर में पूर्व मध्य से आचार्य (स्नातकोत्तर के समकक्ष) कक्षा में 342 विद्यार्थी पढ़ रहे थे। अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सीआईबीएस विभिन्न मठों/विहारों में 50 गोन्पा/मठ विद्यालयों को चला रहा है। राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने सीआईबीएस को लद्दाख क्षेत्र के लिए पाण्डुलिपि स्रोत केन्द्र तथा पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र के रूप में चुना है। वर्ष 2011–12 के दौरान (दिसंबर 2011 तक), पुरावस्तुओं तथा अन्य कला कृतियों के उत्तम संग्रह के साथ संस्थान ने एक सीमित पुरातत्व संग्रहालय तैयार किया है। इसने 2 संगोष्ठियों – भारतीय संस्कृति में बौद्ध परंपरा के योगदान पर एक चार दिवसीय संगोष्ठी और आईसीसीआर के सहयोग के साथ 'कश्मीर में बौद्ध धर्म' पर एक दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसने अब तक 60 दुर्लभ एवं मूल्यवान पुस्तकों का प्रकाशन किया है जिन्हें बिना लाभ, बिना हानि आधार पर बेचा जा रहा है। इसने 'लद्दाख प्रभाग 13' और 'लद्दाख प्रभा 14' शीर्षक से 2 पुस्तकें प्रकाशित की हैं और हिमालयी बौद्ध संस्कृति के विश्वकोश के संकलन का कार्य प्रगति पर है। केन्द्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान के कार्यकरण की मंत्रालय द्वारा समय–समय पर समीक्षा की जाती रही है और यह पाया गया है कि संस्थान बौद्ध संस्कृति और अध्ययन के संवर्धन की दिशा में अत्यधिक योगदान दे रहा है।

केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय (सी यू टी एस) सारनाथ, वाराणसी

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्तशासी संगठन के रूप में कार्य करने वाले केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय (सी यू टी एस) सारनाथ, वाराणसी को तिब्बती संस्कृति के परिरक्षण के लिए एक केन्द्रीय संगठन के रूप में भारत सरकार द्वारा वर्ष 1967 में स्थापित किया गया था। आरंभ में इसने संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के घटक विंग के रूप में कार्य किया और वर्ष 1977 में यह स्वायत्तशासी संगठन बना। बाद में 5 अप्रैल, 1988 को इसे मानित विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया गया। अब यह संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पूर्ण रूप से वित्तपोषित एक स्वायत्तशासी संगठन है। तिब्बती संस्कृति और तिब्बती भाषा में संरक्षित प्राचीन भारतीय विज्ञान और साहित्य, जिसका मूल लुप्त हो गया है, का परिरक्षण करना, भारतीय हिमालय सीमा क्षेत्र के उन छात्रों को वैकल्पिक शैक्षिक सुविधा प्रदान करना जिन्होंने पहले तिब्बत में उच्चतर शिक्षा प्राप्त की है और तिब्बती अध्ययन में उपाधियां प्रदान करने के प्रावधान के साथ शिक्षा के कार्य क्षेत्र को सम्पादित करना इसके लक्ष्य हैं। अपने उद्देश्यों के अनुसरण में, अध्ययन के समयबद्ध पाठ्यक्रम, लिखित परीक्षा और उपाधि प्रदान करने से मिलकर बने आधुनिक विश्वविद्यालयों के ढाँचे के भीतर पारंपरिक तिब्बती शिक्षण पद्धतियों के प्रति झुकाव के साथ तिब्बती अध्ययन में यह विश्वविद्यालय विगत 44 वर्षों से शिक्षा प्रदान कर रहा है। वर्ष 2010–11 के दौरान, लगभग 3410 पुस्तकें खरीदी गईं और 42 अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान जरनलों की सदस्यता प्राप्त की गई। सीयूटीएस के अंतर्गत परिरक्षण/अनुवाद, शब्दकोश और दुर्लभ बौद्ध पुस्तक अनुसंधान विभाग के अनुसंधान अध्येताओं ने विभिन्न बौद्ध पुस्तकों/पाण्डुलिपियों आदि पर महत्वपूर्ण संपादन/अनुवाद/ कार्य करते हुए प्रोजेक्टों को शुरू किया है। इसके अतिरिक्त सीयूटीएस ने बौद्ध दर्शन, पुस्तकों, पाण्डुलिपियों आदि पर बहुत सी संगोष्ठियों, सम्मेलनों/कार्यशालाओं तथा प्रदर्शनियों को आयोजित किया। वर्ष 2011–12 के दौरान (दिसंबर 2011 तक) संस्थान द्वारा 10 शोध कार्यों को शुरू किया गया और 4 प्रोजेक्टों के अनुवाद कार्य को पूरा किया गया। दुलर्भ बौद्ध पुस्तक अनुसंधान इकाई के अंतर्गत (i) 'धीह' अनुसंधान जरनल के 51वें अंक के प्रकाशन (ii) संपुतंत्र, गुह्यसमजप्रतिप्रोद्भोतन/ततनागरुयश्चयोगाथा/आद्यबज्राकृत और (iii) बोधतोसंग्रह से संबंधित कार्य प्रगति पर हैं। सीयूटीएस के शब्दकोश एकक के अंतर्गत विभिन्न प्रोजेक्टों के लिए समीक्षाधीन अवधि के दौरान 6 प्रोजेक्ट को शुरू किया गया। पुस्तकालय ने 42 जरनलों का प्राप्त किया और स्वर्गीय प्रो. जगन्नाथ उपाध्याय के पूर्वजों द्वारा दान दी गई 2741 पुस्तकों को प्राप्त किया गया और इन्हें पुस्तकालय में शामिल किया गया। इसने दिसंबर 2011 तक 7 पुस्तकें प्रकाशित की और 34 संगोष्ठियां/संम्मेलन/कार्यशालाएं/प्रदर्शनियां भी आयोजित कीं। मंत्रालय द्वारा समय–समय पर संस्थान के कार्यकरण की समीक्षा की गई और यह पाया गया कि संस्थान अपना कार्य भली प्रकार कर रहा है।

नव नालंदा महाविहार, बिहार

नव नालंदा महाविहार (एनएनएम) को बिहार सरकार द्वारा पाली और बौद्ध अध्ययन में स्नातकोत्तर अध्ययन एवं अनुसंधान के एक केन्द्र के रूप में 20 नवंबर, 1951 को स्थापित किया गया था। प्राचीन नालंदा महाविहार की तर्ज पर पाली और बौद्ध धर्म में उच्चतर शिक्षा के केन्द्र को विकसित करना महाविहार की स्थापना के पीछे प्रेरणा रही। संस्कृति विभाग, एमएचआरडी, भारत सरकार ने वर्ष 1994 में एक स्वायत्तशासी संस्थान के रूप में इस महाविहार को अपने प्रशासनिक नियंत्रण में ले लिया। 13 नवंबर, 2006 को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने नव नालंदा महाविहार को मानित विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया। एनएनएम स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर उच्च स्तर के पाली और बौद्ध अध्ययन पर आधारित नवोन्मेषी शिक्षण एवं अनुसंधान के लिए प्रतिबद्ध है। यह न केवल अपने विद्यार्थियों में सामाजिक और व्यापारिक कौशलों का विकास करता है बल्कि यह इनमें मानवीय मूल्यों और आध्यात्मिक श्रेष्ठता पैदा करता है। वर्ष 2010-11 के दौरान, एनएनएम की लाइब्रेरी में 3375 पुस्तकें ष्शामिल की गईं और अब इसका संग्रह इसके पास उपलब्ध कुछ दुर्लभ पांडुलिपियों के अतिरिक्त 57300 हो गया है। एनएनएम द्वारा विशेष व्याख्यानों, अंतर्राष्ट्रीय विचार गोष्ठी सम्मेलनों, 'कवि सम्मेलनों', कार्यशालाओं, स्थापना दिवस समारोह आदि सहित लगभग 17 कार्यक्रम आयोजित किए गए। वर्ष 2011-12 (दिसंबर 2011 तक) एनएनएम ने अपने संग्रह में 2700 पुस्तकें जोड़ी हैं। अब इसका कुल संग्रह बहुत सी काष्ठ चित्रीय तिब्बती पाण्डुलिपियों और निःशुल्क पुस्तकों के साथ कुछ दुर्लभ पाण्डुलिपियों सहित 60000 पुस्तकों का हो गया है। इसने वर्ष के दौरान 3 विशेष प्रोजेक्ट शुरू किए हैं नामतः पाली-हिंदी ष्शब्दकोश, पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र (एमआरपी), नालंदा के अंतर्गत पाण्डुलिपियों का प्रलेखन और बिहार में प्राचीन बौद्ध तीर्थ स्थान का पुनरुद्धार। इसने बहुत से महत्वपूर्ण कार्यक्रमों अर्थात गुरू रबीन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं जन्मशती के अवसर पर विशेष व्याख्यान, विश्व पर्यटन दिवस, महा पवरन अभिधम्म दिवस उत्सव, स्थापना दिवस आदि को भी आयोजित किया। मंत्रालय द्वारा समय-समय पर संस्थान के कार्यकरण की समीक्षा की गई है। समीक्षाधीन अवधि के दौरान संस्थान ने प्रभावी ढंग से कार्य किया है।

स्मारक/शताब्दी संस्थान/संगठन
गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का राष्ट्रीय स्मारक है। इसकी स्थापना 18 सितंबर, 1984 को गांधी स्मृति समिति (1971 मे स्थापित) और गांधी दर्शन अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी, राजघाट (1969 में स्थापित) को मिलाकर की गई थी। गांधी स्मृति एवं गांधी दर्शन के मुख्य उद्देश्यों में दोनों परिसर का परिरक्षण, अनुरक्षण तथा रख–रखाव और विभिन्न सामाजिक,शैक्षिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम को आयोजित करके महात्मा गांधी के जीवन, उद्देश्य और विचारों का प्रसार करना शामिल है। जीएसडीएस सार्थक कार्यक्रमों के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों में गांधीवादी मूल्यों के प्रसार को बहुत महत्व देती है। वर्ष 2010–11 के दौरान, जीएसडीएस ने गांधी स्मृति में फोटो प्रदर्शनी का पुनर्सज्जीकरण किया। नोखाली गांधी आश्रम, बांग्लादेश के सहयोग के साथ समिति द्वारा आज के विश्व में शांति और अहिंसा के गांधीवादी संदेश के महत्व पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई। विभिन्न सहयोगी कार्यक्रम के अलावा, समिति ने नोखाली में एक वृहत पुस्तकालय और प्रलेखीकरण केन्द्र स्थापित किया है। जीएसडीएस, आईसीएसएसआर और आईसीपीआर के सहयोग के साथ एनसीआरआई द्वारा नई तालीम के पुनर्बलन, अभिसरण एवं कार्यान्वयन पर राष्ट्रीय कन्वेशन का आयोजन किया गया। वर्ष के दौरान, इसने विभिन्न कार्यशालाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, चित्रकला प्रतियोगिताओं, कठपुतली नाटक, युवा कार्यक्रम आदि का भी आयोजन किया। वर्ष 2011–12 की अवधि के दौरान (दिसंबर 2011 तक) गुरू देव रबीन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं जन्मशती मनाने के अवसर पर जीएसडीएस ने 3 नाटकों नामतः डाक घर, चुट्टी और ताहेर देश का मंचन किया। भूदान आंदोलन की 60वीं वर्षगांठ मनाने के लिए इसने भूमि से जुड़े समसामयिक मुद्दों पर राट्रीय सम्मेलनों और 23–25 नवंबर, 2011 के दौरान 3 दिवसीय आदिवासी संस्कृति संगम का भी आयोजन किया जिसमें 19 राज्यों से लगभग 700 आदिवासियों ने भाग लिया। जीएसडीएस ने समीक्षाधीनअवधि के दौरान गांधी ग्रीष्म स्कूल (बच्चों के लिए), कार्यशालाओं, युवा शिविरों, अन्तरराट्रीय युवा शांति उत्सव, व्याख्यानों, विचार–विमर्शों, सगोष्ठियों प्रकाशनों आदि सहित अपने नियमित कार्यकलापों को जारी करना है। जी एस डी एस के कार्यकरण मंत्रालय द्वारा समय–समय पर समीक्षा की गई और इसे संतोषजनक पाया गया।

<u>नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय (एन एम एम एल)</u>

नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय आधुनिक भारतीय इतिहास का एक प्रमुख अनुसंधान केन्द्र है। एन एम एम एल पंडित जवाहर लाल नेहरू के जीवन और काल पर निजी वस्तुओं का एक संग्रहालय है। इसमें आधुनिक भारत और सम्बद्धविषयों पर विशेष बल के साथ पुस्तकें, पत्रिकाएं, समाचार–पत्र तथा फोटोग्राफ है और साथ ही इसमें ऐतिहासिक दस्तावेजों तथा अभिलेखों की माइक्रोफिल्म तैयार करने का एक रेप्रोग्राफी

प्रभाग, एक पांडुलिपि मिशन तथा एक मौखिक इतिहास प्रभाग ओर एक अनुसंधान एवं प्रकाशन प्रभाग है। यह संग्रहालय दृश्य संचार के माध्यम से भारत में स्वतंत्रता आंदोलन की जानकारी प्रदान करता है। एन एम एम एल ने भारत में राष्ट्रवाद सहित विभिन्न विषयों पर सेमिनार तथा व्याख्यान आयोजित किए। नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय में देश और विदेशों से दर्शक आए। वर्ष 2010-11 में, एन एम एम एल ने मुख्यरूप से आधुनिक भारतीय इतिहास और सामाजिक विज्ञानों पर 4233 प्रकाशनों को अपनी लाइब्रेरी में शामिल किया है जिससे इसका कुल संग्रह 255418 प्रकाशनों का हो गया है। 8750 फोटोग्राफ, 50 सी डी, 242 डी वी डी 178 माइक्रो फिल्में और 47 फोटो एल्बम भी पुस्तकालय से जुड़ने वाली महत्वपूर्ण वस्तुएं रहीं। इसके अलावा, एन एम एम एल द्वारा 3835 लाइब्रेरी पुस्तकों वगीकृत और सूचीबद्ध किया गया, 21630 फोटोग्राफो को अंकीकृत किया गया और 499 जरनलों और 26 समाचार पत्रों को प्राप्त किया गया। विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक विषयों पर 10 प्रस्तुतीकरण किए गए। इसने चीन में 17वें बीजिंग अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले में भाग लिया। वर्ष के दौरान, नेहरू तारामण्डल को पुनर्सज्जित किया गया और डा.करण सिंह, अध्यक्ष द्वारा उद्घाटन किया गया। वर्ष 2011-12 के दौरान (दिसंबर, 2011 तक) इस अवधि के दौरान 18,50,690 आगन्तुक सग्रंहालय को देखने आए। भारत और विदेश से बहुत से प्रतिष्ठित आगन्तुक के यहां आने का भी इसे सुअवसर प्राप्त हुआ। संग्रहालय स्मारिका विक्रय स्थल से जवाहर लाल नेहरू और अन्य राष्ट्रीय नेताओं से जुड़ी 5,09,667 रू की कीमत की पुस्तकें, डी वी डी, सी डी, फोटो ग्राफ और अन्य साहित्य को बेचा गया। पुस्तकालय ने 2271 पुकाशन को जोड़ा है जिससे इसके प्रकाशनों की कुल संख्या 258554 हो गई है। अन्य जोड़ी गई महत्वपूर्ण वस्तुओं में जवाहरलाल नेहरू (1963) और इंदिरा गांधी (1970-1976) से जुड़े 5,533 फोटोग्राफ ष्शामिल हैं। पुस्तकालय ने 493 जरनल प्राप्त किए और 25 समाचार पत्रों की सदस्यता भी प्राप्त की तथा इसने 3610 पुस्तकों को वर्गीकृत और सूचीबद्ध किया। सी राजागोपालचारी (1923-25) के चुनिंदा कार्यों के तीसरे खण्ड की व्याख्या के लिए जानकारी एकत्रित करने से संबंधित शोध कार्य किए गया और जीवनी टिप्पणी को तैयार किया गया और इसे सामग्री में जोड़ा गया। मंत्रालय द्वारा नियमित रूप से संस्थान के कार्य करण की समीक्षा की गई और इसे रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान काफी प्रभावपूर्ण पाया गया है।

मौलाना अबुल कलाम एशियाई अध्ययन संस्थान, कोलकाता

1993 में स्थापित मौलाना अबुल कलाम एशियाई अध्ययन संस्थान, कोलकाता भारत सरकार द्वारा पूर्णतः वित पोषित एक स्वायतत संगठन है। यह संस्थान मौलाना अबुल कलाम आजाद के जीवन और कृतियों के अनुसंधान और प्रशिक्षण का एक केन्द्र है, जिसमें 19 वीं शताब्दी के

मध्य से सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा आर्थिक आंदोलन का अध्ययन होता है। यह संस्थान आधुनिक भारत की धर्मनिरपेक्ष परम्पराओं तथा 19 वीं ष्शताब्दी की घटनाओं के संबंध में पुस्तकों, समाचार पत्रों, फोटोग्राफों तथा समाग्री, जो जनता को अध्ययन और अनुसंधान के लिए उपलब्ध हैं, का एक पुस्तकालय चलाता है। 5, अशरफ मिस्त्री लेन, कोलकाता स्थित मौलाना के पैतृक घर का नवीकरण किया गया है और वहां आजाद स्मरणीय संग्रहालय स्थापित किया गया है। मौलाना आजाद संग्रहालय स्मरणीय वस्तुओं, फोटोग्राफों तथा वृत्तचित्र फिल्मों को संग्रह रखता है। श्री विजय सिंह नाहर के संग्रह से संग्रहालय के लिए बहुत सी दुर्लभ पुस्तकों तथा जरनलों को प्राप्त किया गया। फिल्म प्रभाग के वृतचित्रों को प्रदर्शित करने के माध्यम से विषय में रूचि को भी बढ़ाया गया। संस्थान ने हाल ही में स्मरणीय वस्तुओं के एक संग्रह को प्रात किया है जो कि मौलाना आजाद के भतीजे स्वर्गीय नुरूद्दीन अहमद द्वारा एकत्रित किए गए उनके चाचा के साथ बिताए समय की यादों से संबंधित है। इस संग्रह में मौलाना आजाद की पुस्तकों , फोटोग्राफ तथा कपड़ो को प्राप्त कर करना शामिल है। अशरफ मिस्त्री लेन में मौजूदा संग्रह का संपूरण करने के लिए इस संग्रह को विशिष्ट नुरूद्दीन संग्रह के रूप में अर्जित किया गया है। वर्ष 2010–11 के दौरान, सस्थान के अध्येताओं द्वारा बहुत सी परियोजनाएं संचालित की गई है जिनमें से कुछ को पूरा कर लिया गया है और प्रारंभिक समीक्षा हेतु पुस्तुत किया गया है। संस्थान ने मौलाना अबुल कलाम आजाद की 122वीं जन्मशती को मनाया और जे एन यू के प्रोफेसर द्वारा आजाद स्मारक व्याख्यान दिया गया। अनुसंधान और अध्ययन के विशिष्ट क्षेत्रों पर ग्रीष्म पाठ्यक्रम, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियां, सम्मलेन और परिसंवादों के आयोजन सहित इसने बहुत से सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया है। वर्ष 2011–12 के दौरान (दिसंबर, 2011 तक), 10 पुस्तकें और 01 जरनल प्रकाशित किया है। संस्थान ने संगोष्ठियां आयोजित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय संस्थानों को वित्तीय सहायता प्रदान की है। इसने 5 पुस्तकें प्रकाशित की हैं और 01 जरनल का प्रकाशन प्रगति पर है। इसके अतिरिक्त, दिसंबर, 2011 तक एम ए के ए आई एस द्वारा बाह्य अनुसंधान परियोजना अध्येताओं द्वारा पुस्तुत किए गए अनुसंधान पांडुलिपि का प्रकाशन ष्शुरू किया गया। संस्थान ने राष्ट्रीय/ अन्तरराष्ट्रीय संगोश्ठियों का आयोजन करने के लिए अन्य संस्थानों के साथ आयोजन/सहयोग किया है। संस्थान के कार्यकरण की मंत्रालय द्वारा समय–समय पर समीक्षा की गई और इन समीक्षाओं में यह पाया गया कि संस्थान अध्येताओं, शिक्षाविदों और आम लोगों को भी मूल्यवान सेवाएं प्रदान कर रहा है।

केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान (सी आई बी एस), लेह

यह संस्थान लद्दाख, जो मूलतः बौद्ध स्थल भी है, में बौद्ध संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। लद्दाख का क्षेत्र चीन और पाकिस्तान की सीमाओं से लगता है और इसीलिए यह न केवल सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है अपितु संवेदनशील भी है। सी आई बी एस का मुख्य उद्देश्य आधुनिक विषयों की जानकारी के साथ बौद्ध विचारों, साहित्य तथा कलाओं की जानकारी पैदा करके विद्यार्थियों के बहुआयामी व्यक्तित्व का विकास करना है। संस्थान का मुख्य बल भोति (तिब्बती) भाषा में बौद्ध दर्शन पढ़ाने का है, तथापि, विद्यार्थियों के ज्ञान क्षितिज को बढ़ाने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए अन्य विषय जैसे – हिंदी, अंग्रेजी, सामान्य विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, गणित, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान तथा इतिहास भी पढ़ाए जाते हैं। इसके अलावा, क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए आमची (भोत चिकित्सा), तिब्बती स्क्रोल पेंटिंग, मूर्तिकला और नक्काशी में रूचि रखने वाले छात्रों के लिए छह वर्षीय पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। संस्थान का पुस्तकालय भोति, संस्कृत, पाली आदि भाषाओं सहित विभिन्न भाषाओं में 28,500 पुस्तकों के संग्रह के साथ पूरे बौद्ध हिमालयी क्षेत्र में एक सर्वोत्तम पुस्तकालय है। चारदीवारी, पहुँच और आंतरिक सड़क, अकादमिक भवन पुस्तकालय भवन, प्रशासनिक खण्ड, 100 छात्रों की क्षमता वाले तीन हॉस्टल, क्रीड़ा स्थल तथा प्रवेश द्वार के निर्माण कार्य को पहले ही पूरा किया जा चुका है। सभागार का निर्माण कार्य तथा स्थल विकास कार्य प्रगति पर है। इस क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संजोए रखने के अतिरिक्त यह संस्थान सोवा रिग्या (भोत चिकित्सा) में पाठ्यक्रम भी प्रदान करता है। वर्ष 2011–12 के दौरान सीआईबीएस और डीपीएस जांस्कर के लिए बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए सीआईबीएस के अपने भवन / छात्रावास / अतिथि गृह का निर्माण कार्य के.लो.नि.वि. और राज्य लो.नि.वि. के माध्यम से चरणबद्ध ढंग से चल रहा है। मठीय शिक्षा प्रणाली का परिरक्षण और संवर्धन करने के लिए 50 गोन्पा और मठीय विद्यालय वर्ष 2011–12 के दौरान अपना कार्य जारी रखे हुए थे। 4 शोधिर्थियों ने पीएचडी और अध्येतावृत्ति के लिए अपना शोध कार्य किया। सीआईबीएस ने दुर्लभ पुस्तकों और पाण्डुलिपियों का प्रकाशन शुरू किया और लद्दाखी कला और संस्कृति के परिरक्षण के लिए सेमिनार / विचार – गोष्ठी, व्याख्यान श्रंखला लाएं आयोजित

की सीआईबीएस ने पुनश्चर्या पाठ्यक्रम संचालित किया। इसने पुस्तकालय के लिए बड़ी संख्या में पुस्तकों का अधीग्रहण किया और अपने कर्मचारियों के लिए सेवा प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किया। हिमालयी बौद्ध संस्कृति के विश्वकोश के संकलन का कार्य प्रगति पर है।

वर्ष 2012–13 के दौरान (दिसम्बर, 2012 तक) सीआईबीएस ने शिक्षा की बौद्ध प्रणाली के परिरक्षण और संवर्धन के लिए सीिपित गोनपास, ननरी विद्यालयों को बेहतर बनाने का कार्य शुरू किया। इसने पीएचडी पाठ्यक्रम के लिए अध्येतावृत्ति और आकस्मिकता अनुदान प्रदान करना जारी रखा। दुर्लभ पुस्तकों, पांडुलिपियों के प्रकाशन का कार्य जारी रहा। इसने रिपोटाधीन अवधि के दौरान सेमिनारों, परिसंवादों, व्याख्यान मालाओं, पुनश्चर्या पाठ्यक्रम आदि का भी आयोजन किया। सीआईबीएस ने पुस्तकालय के लिए बहुत सी पुस्तकों को प्राप्त किया और इसने स्टाफ के लिए सेवा कालीन प्रशिक्षण भी संचालित किया। सीआईबीएस ने अपने शाखा विद्यालय के रूप में बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय को अधिग्रहित किया। केन्द्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान के कार्यकरण की मंत्रालय द्वारा समय–समय पर समीक्षा की जाती रही है और यह पाया गया है कि संस्थान बौद्ध संस्कृति और अध्ययन के संवर्धन की दिशा में अत्यधिक योगदान दे रहा है।

केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय (सी यू टी एस) सारनाथ, वाराणसी

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्तशासी संगठन के रूप में कार्य करने वाले केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय (सी यू टी एस) सारनाथ, वाराणसी को तिब्बती संस्कृति के परिरक्षण के लिए एक केन्द्रीय संगठन के रूप में भारत सरकार द्वारा वर्ष 1967 में स्थापित किया गया था। आरंभ में इसने संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के घटक विंग के रूप में कार्य किया और वर्ष 1977 में यह स्वायत्तशासी संगठन बना। बाद में 5 अप्रैल, 1988 को इसे मानित विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया गया। अब यह संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पूर्ण रूप से वित्तपोषित एक स्वायत्तशासी संगठन है। तिब्बती संस्कृति और तिब्बती भाषा में संरक्षित प्राचीन भारतीय विज्ञान और साहित्य, जिसका मूल लुप्त हो गया है, का परिरक्षण करना, भारतीय हिमालय सीमा क्षेत्र

के उन छात्रों को वैकल्पिक शैक्षिक सुविधा प्रदान करना जिन्होंने पहले तिब्बत में उच्चतर शिक्षा प्राप्त की है और तिब्बती अध्ययन में उपाधियां प्रदान करने के प्रावधान के साथ शिक्षा के कार्य क्षेत्र को सम्पादित करना इसके लक्ष्य हैं। अपने उद्देश्यों के अनुसरण में, अध्ययन के समयबद्ध पाठ्यक्रम, लिखित परीक्षा और उपाधि प्रदान करने से मिलकर बने आधुनिक विश्वविद्यालयों के ढाँचे के भीतर पारंपरिक तिब्बती शिक्षण पद्धतियों के प्रति झुकाव के साथ तिब्बती अध्ययन में यह विश्वविद्यालय विगत 44 वर्षों से शिक्षा प्रदान कर रहा है। वर्ष 2011–12 के दौरान, विश्वकोषीय एवं तकनीकी शब्दकोश संकलन स्कीम के अधीन, विश्वविद्यालय ने आयुर्वेद–कोष–5700 शब्द प्रविष्टि, तिब्बती–संस्कृत–ज्योति–3235 शब्द, विनय कोष–3000 शब्द, संस्कृत–तिब्बती–कोष–40000 और नामा कोष शब्दकोष–2500 शब्दों का संकलन किया। वर्ष के दोरान 2646 पुस्तकें और जरनल, इलेक्ट्रोनिक दस्तावेज तथा उपकरणों को खरीदा गया और 12 पुस्तकों को प्रकाशित किया गया। दुर्लभ बौद्ध साहित्य अनुसंधान के अंतर्गत, वार्षिक जरनल प्रकाशित किया गया। कार्यशाला आयोजित की गई। इसके अलावा, 26 अध्यायों को सम्पादित किया गया और पांडुलिपि सर्वेक्षणों को संचालित किया गया। विश्वविद्यालय ने तिब्बती/संस्कृत के ग्रंथों के 1140 पृष्ठों का अनुवाद और व्याख्या कार्य किया। दरभंगा संस्थान की महायान बौद्ध संस्कृत श्रृंखला पाठ के पुनर्संपादन से संबंधित कार्य प्रगति पर है। इस विश्वविद्यालय ने इग्नू, नई दिल्ली के साथ दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम में भी सहयोग किया। वर्ष 2012–13 (दिसंबर, 2012 तक) विश्वविद्यालय ने विश्वकोशीय एवं तकनीकी शब्दकोश के अपने संकलन कार्य को जारी रखा जिसके अंतर्गत तिब्बती चिकित्सा कोश–4000 शब्द , तिब्बती–संस्कृत–ज्योतिष–2100 शब्द, विनय कोश – 1100, संस्कृत – तिब्बती – कोश – 30000 शब्द, नामा कोश – 900 शब्दों को शामिल किया गया। 1500 पुस्तकों, जरनलों, इलेक्ट्रोनिक दस्तावेजों और कुछ उपकरणों को खरीदा गया। 7 पुस्तकें प्रकाशित की गई। ''डीएचआईएच'' के वार्षिक जरनल को प्रकाशित किया गया और 18 अध्यायों को सम्पादित किया गया। तिब्बती और संस्कृत के 425 पृष्ठों का अनुवाद एवं पुनस्थापित किया गया। विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय सेमिनार सहित 2 सेमीनारों का भी आयोजन किया।

<u>नव नालंदा महाविहार, बिहार</u>

नव नालंदा महाविहार (एनएनएम) को बिहार सरकार द्वारा पाली और बौद्ध अध्ययन में स्नातकोत्तर अध्ययन एवं अनुसंधान के एक केन्द्र के रूप में 20 नवंबर, 1951 को स्थापित किया गया था। प्राचीन नालंदा महाविहार की तर्ज पर पाली और बौद्ध धर्म में उच्चतर शिक्षा के केन्द्र को विकसित करना महाविहार की स्थापना के पीछे प्रेरणा रही। संस्कृति विभाग, एमएचआरडी, भारत सरकार ने वर्ष 1994 में एक स्वायत्तशासी संस्थान के रूप में इस महाविहार को अपने प्रशासनिक नियंत्रण में ले लिया। 13 नवंबर, 2006 को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने नव नालंदा महाविहार को मानित विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया। एनएनएम स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर उच्च स्तर के पाली और बौद्ध अध्ययन पर आधारित नवोन्मेषी शिक्षण एवं अनुसंधान के लिए प्रतिबद्ध है। यह न केवल अपने विद्यार्थियों में सामाजिक और व्यापारिक कौशलों का विकास करता है बल्कि यह इनमें मानवीय मूल्यों और आध्यात्मिक श्रेष्ठता पैदा करता है। वर्ष 2011–12 के दौरान, पुस्तकालय सेवा कार्यक्रम के प्रोन्नयन एवं विकास के अधीन लगभग 1000 पुस्तके खरीदी गईं। महाविहार ने भाषाई सामाजिक और दार्शनिक परिप्रेक्ष्य के संबंध में बहुत सी कार्यशालाएं एवं राष्ट्रीय संगोष्ठियों को भी आयोजित किया। वर्ष 2011–12 के दौरान, बिहार का भारत आध्यात्मिक सांस्कृतिक महोत्सव आयोजित किया गया। जुआन जैंग स्मारक के विकास हेतु जुआन जैंग के जीवन से जुड़ी हुई विभिन्न पेंटिंग्स और नीति संबंधी सबक को हासिल किया गया और मेमोरियल में प्रदर्शित किया गया। उत्तर–पूर्व भारत के महोत्सव पूर्वोत्तर महोत्सव को नालंदा में आयोजित किया गया। वर्ष 2012–13 (दिसम्बर 2012 तक), एनएमएम ने 100 बिस्तर वाले अपने नए छात्रावास के लिए अपनी निर्माण परियोजना को जारी रखा। एनएमएम ने संस्थान में कंप्यूटर नेटवर्किंग प्रणाली से जुडी अपनी सभी मौजूदा योजना स्कीमों को जारी रखा। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान बगीचों का विकास, कार्यशालाओं, संगोष्ठियों, सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम, पुरानी और नई प्रकाशनों का मुद्रण, प्रलेखीकरण और प्रदर्शनी पाली–हिंदी शब्द कोश परियोजना आदि। मंत्रालय द्वारा समय–समय पर संस्थान के कार्यकरण की समीक्षा की गई है और यह पाया गया है कि संस्थान ने रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान प्रभावी ढंग से कार्य किया है।

केन्द्रीय हिमालयी सांस्कृतिक अध्ययन संस्थान, दाहुंग, अरूणाचल प्रदेश

यह संस्थान वर्ष 2010 में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन आ गया। i - भारतीय संस्कृति के संबंध में विभिन्न पाठ्यक्रमों की व्यवस्था करना और बौद्ध दर्शन और सांस्कृतिक अध्ययन की विभिन्न शाखाओं में अध्ययन और अनुसंधान को प्रोत्साहित करना, ii- आधुनिक शोध पद्धतियों तथा उन्नत अद्यतन प्रौद्योगिकी के ज्ञान का उपयोग करके शिक्षाशास्त्र पद्धतियों के साथ बौद्ध अध्ययन, भोटी भाषा तथा साहित्य और हिमालयी अध्ययन के क्षेत्रों में उच्च शिक्षण और अनुसंधान के लिए विद्यार्थियों को तैयार करना iii- भारत के उत्तर पूर्व क्षेत्र तथा हिमालयी क्षेत्र के विशेष संदर्भ में सांस्कृतिक मूल्यों, पारंस्थितिक तथा प्राकृतिक संसाधनों के परिरक्षण के बारे में जागरूकता पैदा करना। तथा iv- आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं धारणीय विकास को सुगम बनाने के लिए पारंपरिक कला एवं शिल्प तथा आधुनिक तकनीकी कौशल पद्धतियों की शिक्षा प्रदान करना और राष्ट्रीय एकता के दायरे में रहते हुए नृ–जातीय अस्मिता का परिरक्षण करना इस संस्थान के मुख्य उद्देश्य हैं।

इस संस्थान को मुख्य रूप से योजना शीर्ष के अंतर्गत उत्तर पूर्व कार्यकलापों के लिए आबंटित निधियों के माध्यम से वित्त पोषित किया जाता है। वर्ष 2011–12 के दौरान, सीआईएचसीएस के मुख्य परिसर में अध्यापन खंड और छात्रावास खंड (लडके एवं लडकियों के लिए) का निर्माण कार्य पूरा होने वाला है। संस्थान ने तिब्बती/बौद्ध तथा बौद्ध शिक्षा एवं संस्कृति के विकास से जुडे अपने मौजूदा कार्यक्रमों को जारी रखा। वर्ष 2012–13 के दौरान (दिसम्बर, 2012 तक), संस्थान बौद्ध/तिब्बती कला एवं संस्कृति सहित पारम्परिक कला एवं शिल्प कला आधुनिक तकनीकी कौशलों से जुड़े अपने सभी मौजूदा कार्यक्रमों/ स्कीमों का कार्यान्वयन कर रहा है। पुराने कैम्पस में अवसंरचना विकास से जुडे निर्माण कार्यों को जारी रखा गया। टीएसपी शीर्ष के अंतर्गत, व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए इस क्षेत्र में अथवा इसके आस–पास अनुसूचित जनजाति के लोगों को अधिकतम लाभ पहुंचाने के लिए व्यावसायिक / कंप्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र के लिए भवन के निर्माण कार्य को शुरू किया गया। मंत्रालय नियमित रूप से संस्थान के कार्यकलाप और कार्यकरण का मॉनीटरन कर रहा है।

स्मारक/शताब्दी संस्थान/संगठन
गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का राष्ट्रीय स्मारक है। इसकी स्थापना 18 सितंबर, 1984 को गांधी स्मृति समिति (1971 मे स्थापित) और गांधी दर्शन अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी, राजघाट (1969 में स्थापित) को मिलाकर की गई थी। गांधी स्मृति एवं गांधी दर्शन के मुख्य उद्देश्यों में दोनों परिसर का परिरक्षण, अनुरक्षण तथा रख–रखाव और विभिन्न सामाजिक,ष्शैक्षिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम को आयोजित करके महात्मा गांधी के जीवन, उद्देश्य और विचारों का प्रसार करना ष्शामिल है। जीएसडीएस सार्थक कार्यक्रमों के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों में गांधीवादी मूल्यों के प्रसार को बहुत महत्व देती है। वर्ष 2011–12 के दौरान, जीएसडीएस ने युवाओं और महिलाओं के लिए कार्यक्रम समेत शैक्षिक संस्थानों के साथ विभिनन प्रोत्साहक कार्यकलापों / कार्यक्रमों का आयोजन किया। गांधी जयंती शहीदी दिवस, कस्तूरबा निर्वाण दिवस तथा अन्य महत्वपूर्ण दिवसों के दौरान बहुत से कार्यक्रम आयोजित किए गए। बड़ी संख्या में क्षमता विकास कार्यक्रमों और व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को भी आयोजित किया गया। जीएसडीएस प्रकाशित 3 प्रकाशनों को जारी किया गया। इन प्रकाशनों के माध्यम से महात्मा गांधी के संदेश तथा अन्रू सामाजिक मुद्दों को अपने प्रचार–प्रसार कार्यक्रम के अंतर्गत प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों तरीकों से समाज के अलग–अलग वर्गों के लगभग 20000 बच्चों, युवाओं और समुदायों तक पहुंचाया गया। इसने गांधीवादी सकारात्मक कार्यों और उनके जीवन संदेश को आगे पहुंचाने के लिए सभी उत्तर पूर्व राज्यों में भी अपने कार्यक्रमों का आयोजन किया। वर्ष 2012–13 की अवधि के दौरान (दिसम्बर, 2012 तक) जीएसडीएस ने विभिन्न शिविरों और कार्यशालाओं के माध्यम से महात्मा गांधी के जीवन संदेश और सामाजिक महत्व के मुद्दों पर बच्चों, युवाओं और महिलाओं को अवगत कराने के लिए देश के विभिन्न भागों तथा गांधी स्मृति में विभिन्न कार्यक्रमों को भी आयोजित किया। महिला सशक्तीकरण तथा महिलाओं के विरूद्ध होने वाली हिंसा के खिलाफ लड़ाई हेतु स्मृति ने सकारात्मक एवं जागरूकता कार्यक्रम के लिए देश के विभिन्न राज्यों में महिलओं से संपर्क स्थापित किया और उन्हें इस मुहिम में जोडा। इस कार्यक्रम के माध्यम से समिति ने देश भर में लगभग 5000 महिलाओं तक पहुंच बनाई। सुविधा वंचित और हाशिए पर गए लोगों की क्षमताओं का विकास करने के लिए जीएसडीएस ने समीक्षाधीन

अवधि के दौरान बड़ी संख्या में क्षमता विकास कार्यक्रम / व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। जी एस डी एस के कार्यकरण की मंत्रालय द्वारा समय–समय पर समीक्षा की गई और इसे संतोषजनक पाया गया।

<u>नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय (एन एम एम एल)</u>

नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय आधुनिक भारतीय इतिहास का एक प्रमुख अनुसंधान केन्द्र है। एन एम एम एल पंडित जवाहर लाल नेहरू के जीवन और काल पर निजी वस्तुओं का एक संग्रहालय है। इसमें आधुनिक भारत और सम्बद्धविषयों पर विशेष बल के साथ पुस्तकें, पत्रिकाएं, समाचार–पत्र तथा फोटोग्राफ है और साथ ही इसमें ऐतिहासिक दस्तावेजों तथा अभिलेखों की माइक्रोफिल्म तैयार करने का एक रेप्रोग्राफी प्रभाग, एक पांडुलिपि मिशन तथा एक मौखिक इतिहास प्रभाग ओर एक अनुसंधान एवं प्रकाशन प्रभाग है। यह संग्रहालय दृश्य संचार के माध्यम से भारत में स्वतंत्रता आंदोलन की जानकारी प्रदान करता है। एन एम एम एल ने भारत में राष्ट्रवाद सहित विभिन्न विषयों पर सेमिनार तथा व्याख्यान आयोजित किए। नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय में देश और विदेशों से दर्शक आए। वर्ष 2011–12 में, अध्येता विभिन्न शोध परियोजनाओं पर कार्य कर रहे थे और अध्येताओं के निस्कर्ष और उनके द्वारा तैयार किए गए शोध पत्रों को विनिबंधों के रूप में प्रकाशित किया गया है। इसने सामाजिक शोध पत्र श्रृंखला पर पुनः बल दिया और अब इसने भारतीय विकास और इतिहास एवं समाज पर दृष्किोण पर 2 नई श्रंखला को शुरू किया। वर्ष 1905–1921 की अवधि को शामिल करते हुए सी राजगोपालचारी के चयनित कार्य के प्रथम खंड को मुद्रणालय में भेज दिया गया और द्वितीय खण्ड प्रकाशन के लिए तैयार है। इसने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठियों का आयोजन किया गया। हमेशा की तरह मंगलवार संगोष्ठी और अन्य व्याख्यान का भी आयोजन किया गया इसने प्रतिष्ठित हस्तियों के व्यक्तिगत पत्रों को अर्जित किया क्योंकि ये ऐतिहासिक शोध के लिए सूचना के प्राथमिक स्रोत थे। एनएमएमएल ने नियमित रख–रखाव कार्य के अलावा नेहरू तारामंडल की छुटपुट मरम्मत का कार्य किया। उत्तर–पूर्व कार्यकलाप के एक भाग के रूप में इसने उत्तर पूर्व के मूक और बाधिर बच्चों की एक 10 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया और उत्तर पूर्व में बोडो बच्चों के साथ एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। वर्ष 2012–13 के दौरान (दिसम्बर, 2012 तक),

दो श्रंखलाओं नामतः भारतीय विकास में दृष्टिकोण तथा इतिहास और समाज के अंतर्गत 10 पत्र प्रकाशित किए गए। जबकि सी राजगोपालचारी के चुनिंदा कार्यों का खण्ड – I प्रेस में है तथा पुस्तकालय ने माइक्रोफिल्म और फोटोग्राफ पर सामग्री के अलावा आधुनिक भारतीय इतिहास और संबंधित सामाजिक विज्ञानों पर बल देते हुए पुस्तकों को प्राप्त करना जारी रखा। इसने प्रतिष्ठित हस्तियों के निजी दस्तावेजों को हासिल करना जारी रखा क्योंकि ये ऐतिहासिक अनुसंधान के लिए जानकारी का प्राथमिक स्रोत थे। मंत्रालय द्वारा नियमित रूप से संस्थान के कार्य करण की समीक्षा की जाती रही है।

मौलाना अबुल कलाम एशियाई अध्ययन संस्थान, कोलकाता

1993 में स्थापित मौलाना अबुल कलाम एशियाई अध्ययन संस्थान, कोलकाता भारत सरकार द्वारा पूर्णतः वित पोषित एक स्वायतत संगठन है। यह संस्थान मौलाना अबुल कलाम आजाद के जीवन और कृतियों के अनुसंधान और प्रशिक्षण का एक केन्द्र है, जिसमें 19 वीं शताब्दी के मध्य से सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा आर्थिक आंदोलन का अध्ययन होता है। यह संस्थान आधुनिक भारत की धर्मनिरपेक्ष परम्पराओं तथा 19 वीं ष्शताब्दी की घटनाओं के संबंध में पुस्तकों, समाचार पत्रों, फोटोग्राफों तथा समाग्री, जो जनता को अध्ययन और अनुसंधान के लिए उपलब्ध हैं, का एक पुस्तकालय चलाता है। 5, अशरफ मिस्त्री लेन, कोलकाता स्थित मौलाना के पैतृक घर का नवीकरण किया गया है और वहां आजाद स्मरणीय संग्रहालय स्थापित किया गया है। मौलाना आजाद संग्रहालय स्मरणीय वस्तुओं, फोटोग्राफों तथा वृत्तचित्र फिल्मों को संग्रह रखता है। श्री विजय सिंह नाहर के संग्रह से संग्रहालय के लिए बहुत सी दुर्लभ पुस्तकों तथा जरनलों को प्राप्त किया गया। फिल्म प्रभाग के वृतचित्रों को प्रदर्शित करने के माध्यम से विषय में रूचि को भी बढ़ाया गया। संस्थान ने हाल ही में स्मरणीय वस्तुओं के एक संग्रह को प्रात किया है जो कि मौलाना आजाद के भतीजे स्वर्गीय नुरूद्दीन अहमद द्वारा एकत्रित किए गए उनके चाचा के साथ बिताए समय की यादों से संबंधित है। इस संग्रह में मौलाना आजाद की पुस्तकों , फोटोग्राफ तथा कपड़ो को प्राप्त कर करना शामिल है। अशरफ मिस्त्री लेन में मौजूदा संग्रह का संपूरण करने के लिए इस संग्रह को विशिष्ट नुरूद्दीन संग्रह के रूप में अर्जित किया गया है। वर्ष 2011–12 के दौरान 27 अध्येताओं ने उत्तर पूर्व भारत सहित

विभिन्न क्षेत्रों पर अनुसंधान कार्य किया। बडे पैमाने पर विदेशी दौरे तथा राष्ट्रीय/ अंतरराष्ट्रीय स्तर के दौरे आयोजित किए गए। इसने मौलाना आजाद संग्रहालय में विकास कार्यों के एक भाग के रूप में बेहतर कार्यकरण हेतु तीन मंजिला भवन के रख–रखाव का कार्य भी जारी रखा तथा टिप्पणियों के साथ चित्रों और सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार 'भारत रत्न सहित' 100 स्मृति प्रतीक प्रदर्शित किए गए। इसके अतिरिक्त, इसने मौलाना आजाद पर फिल्म फुटेज दिखाने के लिए एलसीडी टीवी के रख–रखाव का कार्य जारी रखा। 6 पुस्तकें प्रकाशित की गई तथा 2 पुस्तकें अभी मुद्रणालय में हैं। 1 जरनल को भी प्रकाशित किया गया। वर्ष 2012–13 के दौरान (दिसम्बर, 2012 तक), 29 पूर्णकालिक अध्येताओं ने उत्तर पूर्वी भारत सहित विभिन्न क्षेत्रों पर अनुसंधान कार्य किया। 10 से अधिक परियोजना अध्येताओं ने मुख्य रूप से उत्तर पूर्व में कार्य किया। 100 घंटे की श्रव्य अभिलेखागार सामग्री और 100 घंटे की वीडियों सामग्री के अंकीकरण का कार्य किया गया। इसके अलावा 1500 फोटोग्राफ को प्रलेखिकृत किया गया। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान एमएकेआईएएस ने दो महोत्सवों का आयोजन किया। संस्थान के कार्यकरण की मंत्रालय द्वारा समय–समय पर समीक्षा की गई और इन समीक्षाओं में यह पाया गया कि संस्थान अध्येताओं, शिक्षाविदों और आम लोगों को भी मूल्यवान सेवाएं प्रदान कर रहा है।